राम की लड़ाई

लक्ष्मीनारायण लाल
एम० ए०, पी-एच० डी०



राधाकृष्ण

प्रथम संस्करण 1979

मूल्य
10 रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2 अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110002

मुद्रक
कमल प्रेस, गांधीनगर द्वारा
गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-110032

प्रियवर भानुप्रताप शुक्ल को

सवाल आजादी का[1]

रामगुलाम अपने जीवन के 31 साल पूरा कर 32वें साल में प्रवेश कर रहा है। लोग कहते हैं कि जिस दिन वह पैदा हुआ था उसी दिन उसके माँ-बाप भी गुलामी से आजाद हुए थे। रामगुलाम बड़ा हुआ तो उसे बताया गया वह आजादी की सन्तान है।

लेकिन रामगुलाम अभी भी आजादी की खोज कर रहा है। कहा है आजादी ?

नेता दौरे पर आते हैं और रामगुलाम को समझाते हैं—आजादी आने के पहले कानून सात समुन्दर पार विलायत से बनकर आता था और हमारे सिर पर सवार हो जाता था। आज कानून हम खुद बना रहे हैं दिल्ली में बैठकर। हम कौन हैं ? हम तुम्हारे प्रतिनिधि। तुमने अपनी सारी सत्ता हम सौंप दी है और उस सत्ता के सहारे हम राज चलाते हैं। यानी दरअसल तुम राज चलाते हो। ये अफसर-हाकिम हुक्म हमारा मानते हैं लेकिन सेवक तुम्हारे हैं। सरकार तुम्हारी है राज तुम्हारा है।

लेकिन रामगुलाम को नेताजी की बात समझ में नहीं आती। वह टुकुर टुकुर देख रहा है—आजादी आयी तो कौन सा कानून बदला ? आज पुलिस आती है और उसे पकड़कर उसी दफा में बन्द कर देती है जिस धारा में उसके बाप दादा और परदादा को सन 1935 सन 1912 या सन 1889 में बन्द कर देती थी। उसी कानून से मुकदमा चलता है और वैसे ही सजा होती है। यह कहाँ का न्याय है कि आजाद रामगुलाम पर उसी दफा में मुकदमा चले जिसको अँग्रेजों ने अपने राज को मजबूत करने के हिसाब से बनाया और उसका इस्तेमाल किया ? तब हमारी यह आजादी कैसी है ?

रामगुलाम दस दर्जा तक पढ़ा है। क्या पढ़ा ? वही जो मैकाले साहब बना गये

1 प्रस्तुत नाटक अपने प्रथम रूप में 'रामगुलाम की आजादी' नाम से 'पाञ्चजन्य साप्ताहिक (12 अगस्त 1978—स्वतन्त्रता विशेषांक) में प्रकाशित हुआ था। उस विशेषांक का सम्पादकीय।

थे। उस पर भी 'रामगुलाम बाबू' कहलाने का भूत सवार हुआ और चार-छ साल बाबू बनने की कोशिश म बीत गय। जहां जाता था वहीं पता लगता था कि वहां तो बाबू की कुर्सी के उम्मीदवारो की लम्बी लाइन लगी है और वह लाइन बढती ही जा रही थी। लाइन खिसकती नहीं थी। जब कोई कुर्सी खाली होती थी और लाइन के आगे बढने की उम्मीद नजर आती थी तब किसी नेता या हाकिम का नजदीकी चील की तरह झपट्टा मारता था और कुर्सी को लेकर उड जाता था। आखिर रामगुलाम निराश होकर लाइन से अलग हो गया। यो कह कि लाइन छोडने के लिए मजबूर हो गया और मेहनत मजदूरी करने लगा। रामगुलाम की बीवी भी मेहनत-मजदूरी करती है। बेटा पढता भी है और मजदूरी भी करता है। दो जून की रोटी कभी मिलती भी है और कभी नहीं भी मिलती है। लेकिन रामगुलाम आस लगाये बैठा है। किसकी आस लगाकर रामगुलाम बैठा है?

वैसे उसको आस दिलाने हर पाँचवें साल लोग आते हैं। सपने दिखाते हैं, जो उसके सपनो से भी बडे, बहुत बडे, होते हैं। लोग खाता खोलकर दिखाते हैं कि देखो, गाँव-जवार-मुल्क कितना आगे बढ गया है। रामगुलाम हर साल बहीखातो में रकमो के आगे बढते शून्यो को देखता है। लेकिन रामगुलाम का अपना खाता जहाँ का तहाँ है। सरकारी खाते की रकम मे से उसको हिस्सा मिलता है शून्य। रामगुलाम अपने अगल बगल देखकर अपने ही जैसे 'शून्य' के मालिको की गिनती करता है तो देखता है कि उनकी तादाद कल से बढ गयी है। तब सरकारी खाते म दिखायी गयी यह रकम कहाँ चली जा रही है?

रामगुलाम देखता है कि उसके ऊपर उसके मालिको की पकड मजबूत होती जा रही है, अफसर हाकिमो की अकड बढती जा रही है। वह इधर-उधर हिल नहीं सकता। जिधर उसको कहा जायगा उधर ही चलना है, जो उसका दिया जायगा वही उसको खाना पहनना है, जो काम बताया जायेगा वही उसको करना है। आवाज करना मना है क्योंकि आवाज सुनकर सरकार रूपी साँड बिदकता है और सींग तानकर मारने दौडता है—इसलिए जान को सही-सलामत रखने के लिए यह निहायत जरूरी है कि साँड को चुपचाप खेत म चरने दिया जाये।

इतने पर भी रामगुलाम चैन से नहीं बैठ सकता। लोग आकर उसको भडकाते रहते है कि देखो, अमुक सूबे का, अमुक बोली का, अमुक धरम का, अमुक पेशे का दूसरा रामगुलाम तुम्हे गुलाम बनाना चाहता है। इसलिए उससे लडो। रामगुलाम कभी कभी तैश म आकर दूसरे रामगुलाम से लड जाता है और लहू-लुहान होने के बाद जब होश म आता है तब देखता है कि दोनो रामगुलाम एक ही कैदखाने म बन्द हैं। दोनो को नकेल डाल दी गयी है और दोनो की नकेल एक ही हाथ मे है। जब दोनो रामगुलाम उस हाथ से पूछते हैं कि तुम कौन हो तो जवाब मिलता है—'हम तुम्हारे सेवक, तुम्हारे गुलाम'। रामगुलाम अपने गुलामो की

गुलामी मे बँध गया है।

रामगुलाम आजाद कैसे होगा ? गुलामी की रस्सी 31 साल मे कसती ही चली गयी है। जन्म लेने के पाँच साल बाद तक तो रामगुलाम खेलता, कूदता, मचलता रहा। पाँच साल की उम्र आने पर उस लोकतन्त्र की पाठशाला मे भरती करते वक्त बताया गया कि 'रामराज्य' का पाठ पढना है। उसके बाद बताया गया कि रामराज्य के पाठ मे कुछ खामी थी, इसको ठीक करने के लिए 'कल्याण-कारी राज्य' का पाठ पढो। फिर बताया गया कि वह गलत था, 'समाजवादी' तरीके के समाज का पाठ पढो। जैसे-जैसे रामगुलाम बडा होता गया वह अपने राम से दूर होता गया। पैरो के नीचे की धरती खिसकती गयी और वह हवा मे दूसरो की लटकायी हुई रस्सी पकडे लटकता रहा और हर क्षण, हर पल डर से थर्राता रहा कि कब रस्सी हाथ से छूट जाय या अचानक खीच ली जाये और वह धडाम से गिर पडेगा।

अब इस रस्सी का दूसरा छोर जिनके हाथ मे है—वे कहलाते हैं उसके सेवक, उसके गुलाम यानी वह गुलामो का गुलाम है।

रामगुलाम आजाद हो सकता है, बशर्ते वह गुलामी छोडे। अपने राम को पहचाने और अपने राम से जुडे—वही राम जिसका नाम लेते-लेते उसका बापू अपने सपनो की धरोहर साकार करने के लिए उसके हाथो म सौंपकर इस दुनिया से विदा हो गया।

क्रम

राम की लड़ाई



चरित्र और पात्र

रामगुलाम	राम
रमई काका	जनक
सरजू बाबा	विश्वामित्र
हीरा	लक्ष्मण
बिमला	जानकी
शाहजी	बाणासुर
चीलरसिंह	मगध-नरेश
नेताई	रावण
गपोले	परसुराम पहला
लखपतिया	काशी नरेश
मालती	सखी
शान्ती	सखी
कालू	मसखरा
नेउर	कश्मीर नरेश
गडबडसिंह	परसुराम-दूसरा

पहला दृश्य

(लीला शुरू होने से पहले—सामने मच पर लोग, गायक, वादक, अभिनेता आदि खड़े हैं। सगीत उठता है। लोग गाते हैं।)

राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।
टूटी धनुइयां है
छोटे-छोटे हाथ है
माता बिछोह है
भालू-बन्दर साथ हैं।
एक रथ पर चढा
एक पैदल जायी
राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।
एक लकापति
दूसरा वनवासी
एक जानकी-हरनकर्ता
दूसरा जानकी पति, भाई
हे भाई, हे भाई।
राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।

(बीच मे अचानक)

मसखरा मीत करो ज्यादा लीला की गवाई।
हम पचन से पचन के परिचय कराई ।।
रमई काका जनक बने है।
आहा, कैसे बने-ठने है ।।
विश्वामित्र बने है सरजू बाबा।
अरे शोर किया तो डडा खावा ।।
रामगुलाम बना है राम
(सब गाते हैं।)

सब रामगुलाम बना है राम।
रामगुलाम बना है राम ।।

मसखरा विश्वामित्र ने किया इशारा।
खर दूषण को इसने मारा ।।
अब रावण बाणासुर, अहिरावण को मारने के लिए इसे चाहिए
शिव पिनाक।
उसी निमित्त यह धनुषयज्ञ लीला है।

सब उसी निमित्त यह धनुषयज्ञ लीला है।
उसी निमित्त यह धनुषयज्ञ लीला है ।।

मसखरा यह है हीरा जवान।
बना है लक्ष्मण सुजान ।।

सब बना है लक्ष्मण सुजान।

मसखरा यह बिमला बनी जानकी माई है।

सब राम की लडाई है।
बिमला जानकी माई है ।।
आयी राम की लडाई
हे भाई, हे भाई ।।

मसखरा साहूजी बने है बाणासुर
चीलरसिंह बने है मगध-नरेश
नेताई बने है रावण।
एक राजनेता
एक पुराना जमीदार, एक साहूकार
इन तीनो ने मिलकर की तबाही है।

सब अरे, गपोने तो गायब हैं।
इन्ही तीनो के नायब हैं ।।

मसखरा परसुराम का पार्ट वही कर रहे थे
अच्छा-अच्छा तो भाँजी मार दी, वाह-वाह
इन्हें सम्भालो, ई है लखपतिया
बना है कासी-नरेस। देखो भेस।
ई हैं नेउर, बने हैं कसमीर-राजा
ये हैं गडबडसिंह। अरे, आप यहाँ कैसे आ गये? जाइये, दर्शकों में बैठिये। वहाँ खाली रहेगा तो यहाँ कैसे चलेगा?

गडबडसिंह खबरदार, फिर मुझे मत बुलाना।
(दर्शकों में जा बैठते हैं।)

मसखरा मेरा नाम है कालू
कालू से बना मसखरा।
(गाता है)
मैं तो बनारस के ठलुआ रे
कालू मेरा नाम।

सब मैं तो बनारस के ठलुआ रे
कालू मेरा नाम। कालू मेरा नाम।

बिमला अरे, मेरी सखिया का परिचय तो कराया ही नहीं।

मसखरा मार कटारी मरि जाना
ओ अँखिया किसी से लगाना ना।
(सब गाते हैं। मालती और शान्ति दोनों सखियाँ नाचती हैं।)

रमई बस-बस, हो गया परिचय। परिचय के बहाने, लगे गाने-नाचने। अब शुरू करो धनुषयज्ञ लीला।
कैसी मजेदार बात
मिली हमें आजादी आधी रात।।

सब ' कैसी मजेदार बात।
मिली हमें आजादी आधी रात।।

सरजू रात के अँधेरे में क्यों? सुबह की रोशनी में क्यों नहीं? क्या वह नाटक था?

रमई क्या कहा?

सरजू हाँ, यह नाटक था। जैसी जिस तरह आजादी मिली, उसी का अपराध भाव था।

सब कैसी मजेदार बात।
मिली हमें आजादी आधी रात।।

विमला तो क्या हुआ। यह भी तो सच है—क्या ?

वेला फूले आधी रात

वेला फूले आधी रात ॥

सब : वेला फूले आधी रात।

मिली आजादी आधी रात ॥

(गायन)

विमला . वेला फूले आधी रात, गजरा मैं के-के गले डालूं ?

राम गले डालूं लखन गले डालूं

वेला फूले आधी रात,

गजरा मैं के-के गले डालूं ?

सरजू बेटी, जो शिव-धनुष उठायेगा, गजरा उसी के गले डालोगी।

(गाते हुए लोग चलते हैं।)

राम की लड़ाई आयी

हे भाई, हे भाई।

राम की लड़ाई आयी

आधी रात आजादी आयी

राम की लड़ाई आयी।

वेला फूलने की वहार आयी

राम की लड़ाई आयी।

हे भाई, हे भाई

राम-रावण की लड़ाई आयी।

विदूषक : हुअ ! हा हा हा ! कहाँ राम के रमायन, कहाँ उरदे कै भस्का। खाली पेट आजादी का चस्का। अरे, तू किधर खस्का ?

नेउर · बेफजूल टर्र-टर्र। मैं चला अपने घर।

विश्वामित्र : नहीं, नहीं, धनुष-भंग प्रसंग शुरू।

(गायन)

सब : रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर

गावहिं सकल अवधवासी।

अति उदार अवतार मनुज वपु

धरे ब्रह्म अज अविनासी ॥

सरजू . प्रथम ताडकाहति सुवाहुवधि प्रन राख्यो

द्विज हि सब नृपन को गरव हरयो,

भज्यो संभु चाप जनक-सुता समेत

आवत गृह परसुराम अति हासी।

सब : रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर
गावहि सकल अवधवासी।

मसखरा सुनो पचो, सुनो। गपोले पाडे जो परसुराम बनने वाले थे, उन्हे नेताई ने फोड लिया।
कहा—ओ गपोले, यही बात है—साफ कह दो जनक और विश्वामित्र से—ग्राम पचायत चुनाव मे अगर सारा गाँव वोट दे मुझे, तभी परसुराम का पार्ट करूँगा, हाँ, नही तो।

रमई : बड़ा धोखा दिया गपोले ने। भाई कालू, कोई मदद कर।

मसखरा : फिर कहा कालू ?

रमई नही, नही, मसखरा भाई।

मसखरा : वादा करो—सरपच के चुनाव के लिए मुझे खड़ा करोगे।

रमई अरे, रामलीला होने को है, तू भी ऐसी बात कर रहा है। मारूँगा एक हाथ कि. .।

मसखरा अरे रे रे, उपाय बताता हूँ। गड़बड़सिंह को बुलाइये। आ जाओ, भाई।

रमई हम से गलती हुई। छिमा करो। आ जाओ, परसुराम का पार्ट करो।

गड़बड़सिंह : पार्ट करो ! अपना सिर ! अपनी जगह छोड़कर नही आता। बुलाओ गपोले को, मैं क्यो आऊँ ?

मसखरा . अरे, आ जाइये। कान मे एक बात बताता हूँ। (आते हैं) आपकी दादी कसी—परसुराम का फस्टक्लास अभिनय कर दो। लड़की वाले दर्शको मे बैठे हैं। इधर नही, उधर। उधर नही, इधर। जाइये, परसुराम बन के आ जाइये।

(जाते हैं। दो लोग शकर-धनुष ले आते हैं। मसखरा दौड़कर उनकी मदद करता है। धनुष सामने रखा जाता है। मसखरे की कमर टेढी हो गयी है। वह दर्द से चिल्लाता हुआ भचकने लगता है। दोनो आदमी पैर-सिर पकड़, खीचकर सीधा करते हैं।)

रमई : बस, बस, ज्यादा सीधा मत करो, नही तो ऐंठ जायेगा। हाँ, अब धनुषयज्ञ लीला शुरू करो। सगीत छेड़ो। सावधान, सब लोग अपने-अपने सवाद याद रखें।

मसखरा . ऐ बच्चे लोग, चुप हो जाओ। चकर-मकर बन्द। अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाओ।

(सगीत और गायन।)

राजा जनकजी के द्वारी
भीड नही जात सम्हारी
देश नरेसन भूपति आये ।

मसखरा (बीच मे) बैठे हैं सब तोंद फुलाये ।

रमई चुप !

देश नरेसन भूपति आये
बांधे ढाल तलवारी...राजा जनक...
जनकपुरी मे धूम मच्यो है, महकत है फुलवारी।
राजा जनक को भाग जगो है धनुषयज्ञ की बारी ।।

रमई अरे, आप लोग वहाँ क्या कर रहे हैं ? सवाद बोलिये, सवाद ।

मसखरा अरे, जब आपस मे झगडा है तो सवाद कहाँ से फूटे ? देखिये, चुपचाप खिचडी पका रहे हैं। रावण नेताजी, शाहजी बाणासुर। कोई तिकड़म लगाने मे फँस गये हैं।

रमई लीला शुरू है, अपना सवाद बोलो, रावण ।

मसखरा ऐ रावण, तेरा ध्यान किधर ? देख, लीला शुरू है इधर।

नेताई अबे क्या करता है टर्र टर्र ।
मारूँगा, होश उड़ जायेगा उधर।

मसखरा (उँगली पर टोपी नचाता हुआ) यह टोपी है अलबेली ।
इक्तीस साल मे तेइस बार इसने दल बदली।
किस्तीनुमा है टोपी जिधर हवा उधर चली।
मत पूछिये इसका असली क्या था रग ।
असल तो कुछ था ही नही, थी शुरू से ही बदरग ।
अब इसे नीलाम कर दूँ, जो अधिक दे उसके कदमो मे रख दूँ।
सुना है दल-बदल रोकने का कानून पास हो रहा है।

नेताई बन्द कर बकवास ।

मसखरा हाँ गुरु, हो जाव शुरू ।

नेताई भाई, अपन तो राजनीति के आदमी हैं। पहले यह बताओ, रामलीला मे चन्दा कितना वसूल हुआ ? किसने चन्दा इकट्ठा किया ? किसके हुक्म से हुआ ? माल किधर गया ?

शाहजी हाँ, हिसाब हो जाना चाहिए ।

मसखरा अपने आपको राजनीति का आदमी मत कहो । भ्रष्ट राजनीति का पशु कहो । रावण टिर्रे, गधे का सिर्रे। अरे, अरे, मुझे क्यो मारते हो ? मैं तो आपकी प्रजा हूँ। उन्नीस सौ सत्तावन मे पाँच कुएँ खोदे गये कागज पर— ढाई हजार की कुआँ, सन साठ मे

तीन तालाब पाटे गये, जबकि तालाब थे ही नहीं। सन उनहत्तर मे चकबन्दी आयी—फी चक पाँच सौ रुपये। सन पचहत्तर मे नसबन्दी आयी...।

नेताई : बस, बस, हिसाब हो गया।

मसखरा : अरे, अभी तो रोकड़ बही पूरी खुली भी नहीं।

नेताई : शाहजी, इसका मुंह बन्द।

शाहजी : ये रख मूसरचन्द।

(रावण धनुष को देखता है।)

रावण : (अभिनय) अरे, यह मेरे गुरु का धनुष है, जो इसकी हँसी उड़ायेगा, चूर-चूर हो जायेगा।

शाहजी : अरे, यह सवाद नहीं है—तुम्हारे पिछले चुनाव का नारा है—जो हमसे टकरायेगा, चूर-चूर हो जायेगा।

नेताई : वाह, वाह! ऐसा इलेक्शन फिर कभी नहीं आयेगा।

शाहजी : एक बूथ की लुटाई मे पाँच हजार रुपये।

नेताई : नकद।

शाहजी : तीनों को कैसा बेवकूफ बनाया!

(दोनों हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते हैं।)

अगला इलेक्शन पता नहीं कब होगा! समय बड़ा उदास हो गया है। हर साल इलेक्शन हो तो लोग फिलिम देखना बन्द कर दें।

नेताई : अरे, ब्याह-शादी बन्द हो जाये।

रमई : तुम लोग धनुषयज्ञ लीला करने आये हो या कपार फोरने?

नेताई : देखो, जबान सभालकर बोलो, वरना सब बन्द कर दूँगा, हाँ! चन्दे का हिसाब कहाँ है? मुझे जानते नहीं क्या?

मसखरा : आपको कौन नहीं जानता, महाराज! सन साठ मे जब बड़की बाढ़ आयी थी, यही नेता बाबू जिला कलक्टर और अपने एम० पी० को लेकर यहाँ आये थे मुआइना कराने। सरकार की तरफ से जो अन्न, कपड़ा मिला सब ऊपर-ही-ऊपर बेचकर खा लिया। घर बनवाने के लिए फी घर पाँच-पाँच सौ रुपये दिये सरकार ने। यही शाहजी और नेताजी ने मिलकर हमसे अँगूठा लगवाय लिया और सारी रकम हड़प कर गये। बम भोलेनाथ की!

नेताई : बेटे, अपना-अपना पुरुषार्थ है।

(सब राजा लोग दौड़े आते हैं।)

नेउर : यह पुरुषार्थ क्या होता है?

लखपतिया   यह राज हम भी बताइये।

चीलरसिंह   हाँ, महाराज!

नेताई   मन्दिर देखा है न? सबसे ऊपर का जो हिस्सा होता है—सोना वही ऊपर लगाया जाता है। और नीचे नींव में जो कंकड़, पत्थर, ईंट, गारा लगा है उसे कौन देखता है—पड़ा होगा। गाँव जवार के ये देहाती लोग—यही कंकड़-पत्थर, ईंट गारा है। मारो। ऊपर देखना, ऊपर उठना, यही तो है पुरुषार्थ। अरे, पेड़ का फल कोई नीचे लगता है? ऊपर लगता है। अरे, हाथ बढ़ाओ, जिसके जितने लम्बे हाथ, हाथ में जितना बल, उतना ही फल।

सब   वाह! वाह! अरे वाह!

मसखरा   पर मन्दिर तो ऊपर से नीचे तक एक ही होता है। सोचिये भला।

नेताई   सोचना विचारना तुम लोगों का काम, अपना काम तो पुरुषार्थ।

(इस बीच रमई तेजी से आते हैं जनक के भेष में।)

रमई   यह चरित्र अब नहीं चलने को। उस धरती में जहाँ मन्दिर की नींव दी जाती है, उसमें से जानकी निकली है। बायें हाथ से शिव धनुष उठा कर दायें हाथ से पृथ्वी माँ की पूजा करती है। इस धनुषयज्ञ में कोई राम आयगा—क्या है पुरुषार्थ, इसका अर्थ बतायगा।

मसखरा   रावण का अभिनय करते हुए बोलिये—यह मेरे गुरु का धनुष है, इसका अपमान मैं नहीं सह सकता।

रावण   (अभिनय) रावण का अभिनय करते हुए बोलिये—यह मेरे गुरु का धनुष है इसका अपमान मैं नहीं सह सकता।

(मसखरा हँसता है।)

बाणासुर! इसे हँसने दीजिये—हँसना हँसाना ही इसका काम है।

बाणासुर   महाराज इस धनुष को मेरी पीठ पर लाद दो। मैं इसे लेकर चम्पत हो जाऊँ।

रावण   हा हा हा! जिस रावण ने कैलाश पर्वत का मान-मर्दन कर पुष्पक विमान जीत लिया, वह मैं तुम्हारे साथ इस धनुष की चोरी में मददगार बनूँ! नहीं यह नहीं हो सकता। सुन लो, यह धनुष कोई भी तोड़े, पर मेरे जीते जी जानकी को मेरे सिवा और कोई

नही ले जा सकता। हा-हा-हा !

मसखरा : शाबाश पट्ठे। (गा पड़ता है) मर गये, मर गये चम्पालाल, ठंडी बर्फ बनाने वाले।

नेताई : अरे, इधर आ, इधर। मुझे सब मालूम है।

शाहजी : मुझे भी मालूम है।

मसखरा : मुझे भी।

(सब बैठते हैं।)

रमई : यह क्या तमाशा है ?

(मसखरा बढ़कर समझाता है।)

मसखरा : (मानो गाता हुआ) जरा-सी एक प्राइवेट बात है। जरा दूर हट जाइये—विघ्न मत डालिये।

शाहजी : रामगुलाम और बिमला की चाल नही चलने देंगे हम।

नेताई : नीची जाति का रामगुलाम, राम बने—मैं इस बात पर साम्प्रदायिक दंगे करा दूँगा। यह धर्मशास्त्र के खिलाफ है।

शाहजी : पुरोहितजी से कहूँगा।

नेताई : ये लोग समझते क्या है ?

मसखरा : ऐसा है कि बिमला कहती थी, आप लड़कियाँ बेचने का धधा करते है।

नेताई : क्या कहा ?

मसखरा : कुछ नही, कुछ नही, बिमला झूठ बोलती है। रामगुलाम को मैंने डाँट दिया।

शाहजी : रामगुलाम क्या बोलता है ?

(राम के भेष मे रामगुलाम आता है।)

रामगुलाम : रामगुलाम बोलता नही, देखता है। देख रहा हूँ, तुम लोग कब तक बोलते हो। बिमला कोई मामूली लड़की नही, वह अत्याचार-अन्याय के अंधकार को चीरकर बाहर आयी है। उसने मुझे जगाया है। कोई ताकत हमें अलग नही कर सकती।

नेताई : जा, जा, छोटा मुँह बड़ी बात।

शाहजी : अभी तीन सौ पैंतीस रुपये कर्ज है तेरे ऊपर।

धौलरसिंह : तेरा घर मेरी जमीन पर बना है।

रामगुलाम : गाँव की सारी जमीन अब ग्राम-पचायत की है।

नेताई : ग्राम पचायत हमारी है।

रामगुलाम : रमई काका, देखो यह त्रिभुज राक्षस ! जमीदार, बनिया, और नेता—ये तीन भुजाएँ हैं उसकी।

नेताई : क्या कहा ?

रामगुलाम : मुझे कुछ कहना नहीं आता।

(जाता है।)

रमई : धनुष-लीला में विलम्ब हो रहा है।

साहजी : कहता है, विमला ने मुझे जगाया। हम भी तो रोज से जागते हैं।

रमई : फिर तो जागे हैं। चलो, शुरू करें।

नेताई : मैं कहता हूँ, रामगुलाम को राम क्यों बनाया गया ?

सरजू : तुम मन्दिर के केवल शिखर देखते हो, जबकि मन्दिर एक सा है, नींव से लेकर ऊपर तक। खुद टूटे और बँटे हो, तभी चीज को उसकी सम्पूर्णता से तोड़कर देखते हो। लीला के म एक-दूसरे के पास तो आओ—फिर देखो, बाहर से अलग रहा, भीतर सब एक है। रामगुलाम कितना शुद्ध और सीधा कहता है—जो भी है सब अपने ही हैं।

नेताई : तुम लोग रामगुलाम को सिर पर चढ़ा रहे हो। भोगोगे नतीजा।

मसखरा : आप लोग तो नाहक डरते हैं। धूल में रस्सी बटते हैं। रामलीला शुरू करते हैं। देखिये, पुरानी बातें फिर न लाइये।

सरजू : रामलीला के बहाने अपने-आप से से जरा बाहर आ जा

मसखरा : भाइयो और बहनो, बुरा मत मानिये, ज्यों केले के पा पात में पात, त्यों नेता की बात में, बात-बात में बात,

नेताई : आखिर बिना किसी कारण के कोई कैसे बड़ा हो गय

मसखरा : हे रावण, मुझे तो बातें करने का रोग हो गया है। ह रावण, रावण, रावण। बन्द करो मुँह का फाटक।

नेताई : अबे, मुझे क्या कहा ! [illegible] एक बार [illegible] आखिर रामगुलाम की [illegible] क्या है ?

मसखरा : उसको [illegible] तो हर गाँव के [illegible] पहुँचा दी जाती है। बुरा न मानिये, [illegible]

सरजू : तुम्हारी [illegible] है, सभी तुम आकार [illegible] हो। [illegible] ईश्वर, यही अन्तर धीरज [illegible]

मसखरा : क्या [illegible] [illegible] क्या कहा [illegible] [illegible] है [illegible]

दीवाला बोल्या। सन पचहत्तर मे सबकी दुकान बन्द कर फिर अपनी दुकान खोल्या। आयी नसबन्दी, दुकान बन्द कर दी। न लगे नमक, न लगे हल्दी। भला हो राजनीति का। फार्मूला मिल गया, कैसे चना वेचकर होता है कोई लखपती। चना गरम। वेचना-विकना ही अपना धरम।

नेताई अरे, चुप रहता है या नही।

मसखरा : ये हैं चना गरम के व्यापारी, मैं हूँ इनका पटवारी।

नेताई . देखो, यह बदमाश रामलीला नहीं होने दे रहा।

मसखरा : क्योंकि रावण राम बन रहा। पर अब नही चलेगी यह चाल। जनता खीच लेगी खाल।

नेताई : जनता माने ?

रमई जानकी।

नेताई . जानकी माने ?

सरजू : जनक की बेटी, भारत माँ, जिसके शरीर मे ऋषि-मुनियो का रक्त है। जिसने पृथ्वी के भीतर से जन्म लेकर हमे यह जताया कि हमारी जान-पहचान तभी पूरी होती है, जब हम अपने से बाहर आते है। पर जो अकेला है, वह बाहर नही जा सकता, सारी शक्तियो के बावजूद रावण अकेला था। अकेला था तभी डरा हुआ था। डरा हुआ था तभी शक्ति को चुराता, डाके डालता रहता था।

नेताई तो मैं वही रावण हूँ—मैं रावण, लीला नही करूँगा।

सरजू यही तो, रावण मत बनो। रावण की लीला करो। कपडे उतारे नही कि रावण गायब। भ्रष्ट नेतागिरी को कपडे की तरह उतारकर देखो, कितने सहज सुन्दर हो, जैसे सब है। कहाँ भटकते हो, चलो, रावण बनकर देखो—क्या है रावण। जब अपने-आपको देखोगे तो उसी देखने मे सब-कुछ साफ दीखने लगेगा।

नेताई : चलो, देखता हूँ।

मसखरा . रामगुलाम को या अपने-आपको ?

नेताई : अगर मै रावण बन सकता हूँ तो राम भी बन सकता हूँ। हनुमान और भरत भी।

सरजू · यह हुई न बात।

नेताई : मेरा सवाद क्या है ?

मसखरा : रावण धनुषयज्ञ मडप मे आकर पृथ्वी माँ को प्रणाम करता है। प्रणाम करो, रावण।

नेताई : क्या कहा ?

रामगुलाम : मुझे कुछ कहना नही आता ।

(जाता है ।)

रमई . धनुष-लीला मे विलम्ब हो रहा है ।

शाहजी : कहता है, बिमला ने मुझे जगाया । हम भी तो रोज सोकर जागते है ।

रमई . फिर सो जाते है । चलो, शुरू करो ।

नेताई : मैं कहता हूँ, रामगुलाम को राम क्यों बनाया गया ?

सरजू . तुम मन्दिर के केवल शिखर देखते हो, जबकि मन्दिर एक सम्पूर्ण है, नीव से लेकर ऊपर तक । खुद टूटे और बँटे हो, तभी हर चीज को उसकी सम्पूर्णता से तोड़कर देखते हो । लीला के बहाने एक-दूसरे के पास तो आओ—फिर देखो, बाहर से अलग दीख रहा, भीतर सब एक है । रामगुलाम कितना शुद्ध और सीधा है । कहता है—जो भी है सब अपने ही है ।

नेताई . तुम लोग रामगुलाम को सिर पर चढ़ा रहे हो । भोगोगे इसका नतीजा ।

मसखरा आप लोग तो खामखाह डरते है । धूल मे रस्सी बरते हैं । चलिये, रामलीला शुरू करते है । देखिये, पुरानी बातें फिर यहाँ मत लाइये ।

सरजू : रामलीला के बहाने अपने-आप मे से जरा बाहर आ जाइये ।

मसखरा · भाइयो और बहनो, बुरा मत मानिये, ज्यो केले के पात मे, पात-पात मे पात, त्यों नेता की बात मे, बात-बात मे बात ।

नेताई आखिर बिना किसी ताकत के कोई कैसे खडा हो सकता है ?

मसखरा : हे रावण, तुझे तो बातें करने का रोग हो गया है । हर वक्त वही ताकत, ताकत, ताकत । बन्द करो मुँह का फाटक ।

नेताई · अबे, तुझे क्या पता ! जिसे लग जाये एक बार ताकत का नशा । आखिर रामगुलाम की ताकत क्या है ?

मसखरा : उसकी ताकत तो हर पाँचवें साल खीचकर लखनऊ और दिल्ली पहुँचा दी जाती है । बुरा न मानिये, आपके हाथ मे घी-शक्कर ।

सरजू : तुम्हारी ताकत बाहर है, तभी तुम आजाद बनकर भी पराधीन हो । हमारी ताकत वही ईश्वर, वही अपना करम, वही अपना धीरज-धरम !

मसखरा : चना गरम । चना जोर गरम । यह चना बडा अलबेल्या, सन अड-तालीस मे हमने यह दुकान खोल्या । सन उनहत्तर मे हमने इसका

दीवाला बोल्या। सन पचहत्तर मे सबकी दुकान बन्द कर फिर अपनी दुकान खोल्या। आयी नसबन्दी, दुकान बन्द कर दी। न लगे नमक, न लगे हल्दी। भला हो राजनीति का। फार्मूला मिल गया, कैसे चना बेचकर होता है कोई लखपती। चना गरम। बेचना-बिकना ही अपना धरम।

नेताई अरे, चुप रहता है या नही।

मसखरा ये हैं चना गरम के व्यापारी, मैं हूँ इनका पटवारी।

नेताई देखो, यह बदमाश रामलीला नही होने दे रहा।

मसखरा क्योंकि रावण राम बन रहा। पर अब नही चलेगी यह चाल। जनता खीच लेगी खाल।

नेताई जनता माने ?

रमई जानकी।

नेताई जानकी माने ?

सरजू जनक की बेटी, भारत माँ, जिसके शरीर मे ऋषि-मुनियो का रक्त है। जिसने पृथ्वी के भीतर से जन्म लेकर हमे यह जताया कि हमारी जान पहचान तभी पूरी होती है, जब हम अपने से बाहर आते है। पर जो अकेला है, वह बाहर नही जा सकता, सारी शक्तियो के बावजूद रावण अकेला था। अकेला था तभी डरा हुआ था। डरा हुआ था तभी शक्ति को चुराता, डाके डालता रहता था।

नेताई तो मैं वही रावण हूँ—मैं रावण, लीला नही करूँगा।

सरजू यही तो, रावण मत बनो। रावण की लीला करो। कपडे उतारे नही कि रावण गायब। भ्रष्ट नेतागिरी को कपडे की तरह उतारकर देखो, कितने सहज सुन्दर हो, जैसे सब है। कहाँ भटकते हो, चलो, रावण बनकर देखो—क्या है रावण। जब अपने-आपको देखोगे तो उसी देखने मे सब-कुछ साफ दीखने लगेगा।

नेताई चलो, देखता हूँ।

मसखरा रामगुलाम को या अपने-आपको ?

नेताई अगर मैं रावण बन सकता हूँ तो राम भी बन सकता हूँ। हनुमान और भरत भी।

सरजू यह हुई न बात।

नेताई मेरा सवाद क्या है ?

मसखरा . रावण धनुषयज्ञ मडप म आकर पृथ्वी माँ को प्रणाम करता है। प्रणाम करो, रावण।

नेताई पृथ्वी रावण की माँ ? फिर तो जानकी रावण की बहन हुई ?

मसखरा यही लीला है। बाहर से जो इतने परस्पर विरोधी दिख रहे है—सबका एक ही सम्बन्ध है।

(रावण पृथ्वी को प्रणाम करता है। सगीत बजता है। गायन होता है।)

मूरख, छाडि वृथा अभिमाना
औसर बीत चल्यो है तेरो दो दिन को मेहमाना
भूप अनेक भये पृथ्वी पर रूप तेज बलवाना
कौन बच्यौ या काल तालिते मिट गये नामनिसाना
धवल-धाम गज धन रथ सेना नारी चद्र समाना
अन्त समै सबही को तजि के जाय बसे समसाना ।

रावण बस, बस, बस। राजागण दिलो पर हाथ रख लें। यह मेरे गुरु का धनुष है, इसे मैं ही उठा सकता हूँ। मैं लकापति। मेरी भुजाओ मे अपार बल। जिधर देखता हूँ उधर सब-के-सब निर्बल।

बाणासुर सत्य वचन।

मसखरा रावण, सुन ल आकाशवाणी। तेरी कन्या कुभनिसी को मधुदैत्य चुराये।लिये जा रहा है। कुभकरण सो रहा है। मेघनाथ भोजन कर रहा है। भागो, जाओ, अपनी कन्या को राक्षस से बचाओ।

(रावण और बाणासुर भागते हैं।)

दूसरा दृश्य

(संगीत उभरता है।)

बोले बन्दी वचन वर सुनहु सकल महिपाल।
पन विदेह कर कहहिं हम भुजा उठाई विसाल ।।
नृप भुजबलु विधु सिवधनु राहू,
गरुअ कठोर विदित सब काहू ।।
रावण बानु महाभट्ट मारे,
देखि सरासन गवहिं सिधारे ।।
सोइ पुरारि को दंड कठोरा,
राजसमाज आजु जोई तोरा ।।

जनक जनकपुरी मे पधारे हुए महिपाल, राजा सुजान सुनो। सुनो मेरा प्रण। जो इस शंकर पिनाक को उठा लगा उस मैं अपनी बेटी जानकी का पति मानूँगा। जो करेगा अपने भुजबल से मेरा यह प्रण पूरा, उसे मेरी बेटी जयमाला देगी, न होगा मेरा वचन अधूरा।

मसखरा गुरु-संग पधारे है लक्ष्मन राम इस नगर म, किसी क्षण भी वे आ सकते है, इस रंगभवन मे। धनुषयज्ञ शुरु हो चुका है। वीर जन आजमायें अपनी किस्मत को। हटो, बचो, चौलरसिंहजी आ रहे है, बाप रे-बाप, इतने गुस्से मे!

(बडी तोंद वाले चौलरसिंह आते हैं।)

आपकी तारीफ?

चीलरसिंह : बता, क्या है तारीख ?
मसखरा : हमारे यहाँ तारीख, सन, संवत् नही चलती, हमारे यहाँ चलती है अँग्रेजी की डेट', चीलरसिंह महाराज है विलायती ठेट। ये नही जानते क्या है नीति-अनीति, ये करते है सिर्फ विलायती राजनीति।
चीलरसिंह . मैं अँग्रेज हूँ, विलीवास्केट !
मसखरा अँग्रेज नही, रंगरेज हैं। कोई भी सीधी-सादी चीज हो, कोई भी बात हो, उसे झट रंग देंगे अपनी भ्रष्ट राजनीति के रंग मे, छुये बिना धनुष को कर देंगे धनुष-भंग ये।
चीलरसिंह : और क्या, मुझ जैसा वीर कौन है ?
मसखरा : (गा उठता है।)

ये है बड़े वीर मजबूता।
ये है बड़े वीर मजबूता।
मक्खी मारें मोछ उखारे
तोडें कच्चा सूता।
ये है बड़े वीर मजबूता।
हँडिया दाल सवासो रोटी
खाकर हो गये मोटे।
एक जलावे चार लड़ावें
खुद खटिया तर लूका
ये है बड़े वीर मजबूता।

तो चलिये महाराज, धनुष उठाइये।
चीलरसिंह . फाइल की तरह धनुष मेरा प्राइवेट सेक्रेटरी उठायेगा। मैं तो केवल हस्ताक्षर करता हूँ।
मसखरा : अरे, यह फाइल नही, धनुष है।
चीलरसिंह : यह धनुष तो कभी का टूट चुका है।
मसखरा : जी हाँ, पहले तोडा अँग्रेजो ने, इस्तमरारी बन्दोबस्त करके, परमानेंट सेटिलमेंट, फिर तोडा जमीदारी ने, लूट-पाट मे भाग लेकर। फिर तोडा चुनाव ने; जो बाकी रहा उसे लगे हैं हम तोडने मे। जै राम जी की।
चीलरसिंह : यह रामलीला हो रही है कि पोपलीला ?
मसखरा : जब आपने कहा कि यह धनुष कभी का टूट चुका है, तो कहाँ से होगी अब रामलीला ?
चीलरसिंह : अरे, मेरे मुँह से निकल गया।
मसखरा : यह कोई भ्रष्ट राजनीति का मंच है, जो आया बक दिया ? यह

ही नही, जहाँ आप अक्सर रूप बदलते है। जी हाँ।
हुए गपोले आते हैं।)

" , मूढ न त आजू, उलटो महि जहँ लगि
।-हा, चढ पर चढ कर दूँ, पर्वत को भी लड़-
। है गढवर्डसिंह ? मेरे जीते जी कोई दूसरा कैसे
राम का पार्ट ? मारूँ वह झापड कि फेल हो

मना कर दिया था कि रामलीला मे भाग
का पार्ट नही करूँगा।
कि तुम दूसरा परसुराम बना लो।
। ता करनी थी।
उसकी यह हिम्मत कि मेरे जीते जी वह
। खाल खीचकर, भूसा भरा कर...।
र इग्लैंड भिजवा दूँगा।
मत डालिये। दर्शको मे बैठकर शान्ति

भया।
है।

की लगाई हुई है। पहले गपोले की मना
म समर्थन की। जब दूसरा परसुराम
म मिट्टी का तन डाल दिया।
?

नही ?
होगी जब मैं होऊँ परसुराम।
की कूअत, उलट दूँगा सारा काम।
रा काम, मेरा है नाम गपोले।
सिर पर, मैं बरसाऊँ गोले।
के रूप मे गड़बड आते हैं।)
बतिया काउ नाही,

काम तमाम।
गैमा-गैमा,

चीलरसिंह · बता, क्या है तारीख ?

मसखरा . हमारे यहाँ तारीख, सन, सवत् नही चलती, हमारे यहाँ चलती है अँग्रेजी की डेट', चीलरसिंह महाराज है विलायती टेट। ये नही जानते क्या है नीति-अनीति, ये करते हैं सिर्फ विलायती राजनीति।

चीलरसिंह . मैं अँग्रेज हूँ, बिलीवास्केट !

मसखरा अँग्रेज नही, रगरेज हैं। कोई भी सीधी-सादी चीज हो, कोई भी बात हो, उसे झट रग देंगे अपनी भ्रष्ट राजनीति के रग मे, छुये बिना धनुष को कर देंगे धनुष-भग ये।

चीलरसिंह . और क्या, मुझ जैसा वीर कौन है ?

मसखरा · (गा उठता है।)

ये हैं बड़े वीर मजबूता।
ये हैं बड़े वीर मजबूता।
मक्खी मारे मोछ उखारे
तोड़े कच्चा सूता।
ये हैं बड़े वीर मजबूता।
हँडिया दाल सवासो रोटी
खाकर हो गये मोटे।
एक जलावें चार लड़ावें
खुद खटिया तर लूका
ये हैं बड़े वीर मजबूता।

तो चलिये महाराज, धनुष उठाइये।

चीलरसिंह . फाइल की तरह धनुष मेरा प्राइवेट सेक्रेटरी उठायेगा। मैं तो केवल हस्ताक्षर करता हूँ।

मसखरा अरे, यह फाइल नही, धनुष है।

चीलरसिंह · यह धनुष तो कभी का टूट चुका है।

मसखरा : जी हाँ, पहले तोड़ा अँग्रेजो ने, इस्तमरारी बन्दोबस्त करके, परमानेंट सेटिलमेंट, फिर तोड़ा जमीदारी ने, लूट-पाट मे भाग लेकर। फिर तोड़ा चुनाव ने, जो बाकी रहा उसे लगे हैं हम तोड़ने मे। जै राम जी की।

चीलरसिंह . यह रामलीला हो रही है कि पोपलीला ?

मसखरा . जब आपने कहा कि यह धनुष कभी का टूट चुका है, तो कहाँ से होगी अब रामलीला ?

चीलरसिंह . अरे, मेरे मुँह से निकल गया।

मसखरा : यह कोई भ्रष्ट राजनीति का मच है, जो आया बक दिया ? यह

वह नौटंकी नही, जहाँ आप अकसर रूप बदलते है। जी हाँ।

(दौड़े हुए गपोले आते हैं।)

गपोले : (गुस्से में) बेगिदेखाऊँ, मूढ न त आजू, उलटो महि जहँ लगि तव राजू। हा-हा-हा, चंड पर चंड कर दूँ, पर्वत को भी खंड-खंड कर दूँ। कहाँ है गडबडसिंह ? मेरे जीते जी कोई दूसरा कैसे कर सकता है परसुराम का पार्ट ? मारूँ वह झापड कि फेल हो जाय हार्ट !

मसखरा : अब संभालो। आपने मना कर दिया था कि रामलीला मे भाग नही लूंगा। परसुराम का पार्ट नही करूंगा।

गपोले : तुम्हारी यह हिम्मत कि तुम दूसरा परसुराम बना लो !

मसखरा . अरे भाई, रामलीला तो करनी थी।

गपोले : कहाँ है गडबडसिह ? उसकी यह हिम्मत कि मेरे जीते जी वह परसुराम बने ! मैं उसकी खाल खींचकर, भूसा भरा कर...।

मसखरा : रंग लगाकर, भग पिलाकर इग्लैंड भिजवा दूँगा।

रमई : देखिये, रामलीला मे विघ्न मत डालिये। दर्शकों मे बैठकर शान्ति से रामलीला देखिये।

गपोले : तुम चुप रहो, रमई काका।

चीलरसिंह : बडे राजा जनक बने हुए हैं !

मसखरा : सारी आग उन्ही नेताई की लगाई हुई है। पहले गपोले को मना किया—शर्त रखी चुनाव मे समर्थन की। जब दूसरा परसुराम आ गया तो अब आग मे मिट्टी का तेल डाल दिया।

गपोले : चुप रहता है कि नहीं ?

रमई : रामलीला होने दोगे कि नही ?

गपोले :

रामलीला तभी होगी जब मैं होऊँ परसुराम।
नही जानते मेरी कूव्वत, उलट दूँगा सारा काम।
उलट दूँगा सारा काम, मेरा है नाम गपोले।
गड़बड़सिह के सिर पर, मैं बरसाऊँ गोले।

(गुस्से में परसुराम के रूप मे गड़बड़ आते हैं।)

गडबडसिह : अरे जा, जा, यहाँ कोहड बतिया कोउ नाही,
तो तर्जन देखत मुरझाही।
मैं गड़बड नही, अब हूँ परसुराम,
फरसा मेरे हाथ मे, कर दूँ काम तमाम।
कर दूँ काम तमाम, नही हूँ ऐसा-वैसा,
लौटे चला जा जैसे का तैसा।

गपोले तेरी यह मजाल, खीचता हूँ तेरी खाल।
गडबडसिंह जा, जा, मत बजा गाल।

(संघर्ष। लोग बीच-बचाव करते हैं।)

गपोले या तू रहगा या मैं।
मसखरा सच है —रह नही सकती दो तलवारें एक म्यान मे, दोनो उम्मीदवार हैं सरपची के चुनाव म। सारी आग नेताई की लगायी हुई है। चीनरसिंह तुम क्या खुसुर पुसुर कर रहे हो ?
चीनरसिंह सब वही कर रहे हैं।
सरजू सब पर इतना बीता है कि वही फूटकर बहने लगता है। फिर भी सोचो तो भला आखिर तब भी एक दूसरे के साथ क्यो रहना चाहता है ? क्योकि एक दूसरे के साथ फिर भी अपनी किसी सनातन एकता, समानता का अनुभव करता है। जिसे इस अनुभव पर विश्वास नही वह इस लीला मे हिस्सेदार नही।

(इस बीच नेताई और शाहजी वहाँ आ खड़े हुए हैं।)

नेताई मैं पूछता हूँ—गपोले को परसुराम क्यो नही बनाया जाता ?
शाहजी जो पहले का फैसला था वह माना क्यो नही जाता ?
रमई फैसला आप करें खुद तोडें आप, फिर उलटे लडें भी आप, और इस गन्दी लडाई म सबका लहू लुहान करें।
नेताई क्या मतलब ?
मसखरा मतलब मैं समझा दूँ—पर हाथ जोडता हूँ मेरे इस सिर का खयाल करना, मेरे बच्चो का ध्यान रखना। मतलब यह है कि आज स चालीस साल पहले आप ही इस गाँव मे तिरगा झडा लेकर आये। पाँच साल बाद समाजवादी झडा लाये। और तिरगे झडे को उलटकर झोला सिला लिया। फिर तीन साल बाद लाल झडा लाये और समाजवादी झडे से जूता साफ करने लगे।
गपोले अबे चोप्प !
नेताई निकाल दो इसे। अरे रे रामलीला से, अपनी पारटी से नही।
मसखरा बकवास है तुम्हारी पारटी।
सरजू बकवास हमारी जिन्दगी म है तो इसम बचोगे कैसे ? यहाँ घटी हर घटना का सम्बन्ध हमसे है इसीलिए हमी जिम्मेदार हैं। हर झडे ने हम बाँटा और हर चुनाव ने हम मनुष्य से वोटर किया। जो कुछ वही होता है उसका असर तब तक नही मिटता, जब तक वह मिटाया नही जाता। और यह तब तक सम्भव नही

होता जब तक हर आदमी यह महसूस नही करता कि एक नही,
सब है सब के लिए जिम्मेदार ।

(सब चलते हैं । यात्रा-गान)

राम की लडाई आयी
हे भाई, हे भाई ।
आगे-आगे राम चलें
पीछे लछिमन भाई ।
ताके पीछे मातु जानकी
बिपदा कही न जायी
हे भाई, हे भाई ।
राम की लडाई आयी
हे भाई, हे भाई ।

(यात्रा थमती है ।)

तीसरा दृश्य

(रामगुलाम के दरवाजे पर मालती के साथ बिमला आती है।)

रामगुलाम बिमला क्या बात है ? मालती क्या हो गया ? बोलती क्यों नहीं ?

मालती बहुत जुलुम हो गया। बिमला दीदी के पिता की हत्या हो गयी।

रामगुलाम शिवशंकर बाबा !

मालती उन्नीस सौ इकहत्तर का यह चुनाव जो कुछ न करा डाले थोड़ा है।

रामगुलाम यह कब की बात है ?

बिमला इलेक्शन से पिछली रात की। उस दिन सुबह से तीनों पार्टियों के लोग भोंगे में रुपये पिस्तौल हथगोला भरे पिताजी के पास आते रहे। हर तरह से दबाव डालकर अपने हक में वोट लेने के लिए।

रामगुलाम जिसका नाम शिवशंकर बाबा ले लेते पूरा इलाका गाँव-जवार उसी को ही मतदान करता।

बिमला वह एक एक को डाटते फटकारते रहे—यह आजादी नहीं गुलामी है। यह मतदान नहीं डाकाजनी है। भारत माता का श्राप लगेगा। सारे गाव जवार से कह दिया कि जब चुनने को कुछ नहीं है तो चुनाव किसका ! उसी रात मेरे साधू पिता की हत्या ।

(एक औरत आती है।)

औरत : अरे, यही तो है बिमला—शिवशकर की बेटी। इसके घर आयी है। इसके साथ घर-बैठा बैठेगी ?

मालती : चुप रह, मुंहझौसी।

औरत : हाँ-हाँ, पता है बडा परेम है—मुला गाँव वाले हड्डी-पसली एक कर देंगे। ऊँची जात की लडकी, नीची जात का लडका—वही कहावत है कि राह चला न जाये, रजाई का फांड बांधे। मलुक्का देखो इतना ना फुलावो, हाँ . ।

मालती : जा, जा...।

(औरत जाती है।)

बिमला : क्या सोच रहे हो ?

(सरजू बाबा उठते है।)

रामगुलाम : कुछ नही। आवो, घर मे चलो।

बिमला : सोच लो—बहुत लम्बी लडाई है।

रामगुलाम : सोच लिया है।

सरजू : सोचो नही, सकल्प करो।

रामगुलाम : सकल्प करता हूँ।

सरजू : अब बोलो अपने अन्तःकरण से।
खबरदार, भागकर पीछे न चले जाना।
हर समय इसी वर्तमान मे रहना।
समस्या वर्तमान है तो इसका हल भी वर्तमान मे ही है। जो रो पडता है, वह पीछे भागता है, अपने बचपन मे। बचपन मे कितना रोया है, याद है न ? वही रुलाता है। वर्तमान मे सकट आया नही कि वही बच्चा खींचकर पीछे भागता है। पीछे मत जाना, भागना नही।

रामगुलाम : आपका आशीर्वाद। सुनो बिमला, तुम्हारा इस तरह आना, मेरे घर मे रहना, तुम्हारे आत्म सम्मान के खिलाफ है। यहाँ ले आने के लिए तुम्हे, मैं खुद आऊँगा तुम्हारे घर।

बिमला : तब लडाई होगी।

रामगुलाम : लडाई लडूँगा।

(बिमला लौट जाती है।)

सरजू : और एक दिन रामगुलाम गया बिमला के गाँव। सोहाग चूनर, चूडियाँ, पायल, बिछुए, सिंदूर लिये। गाँव वालो ने विरोध किये। लाठियाँ उठा ली। मार दो जान से—ब्राह्मण की बेटी ले जाने आया है। मैंने समझाया। यह सम्बन्ध जात-बिरादरी से ऊपर

गा है। यह देवी का अपमान है। राम मेरा शिष्य है। मैंने उसे बचपन में पढ़ाया-लिखाया। उस जैसा चरित्रवान, धर्मवान...।

एक और चरवाहा।

दूसरा : चरित्रवान।

(दोनों लाठियाँ लिये सरजू को घेर लेते हैं।)

सरजू : हाँ हाँ, धनवान, चरित्रवान।

एक देखते हैं, इस शिष्य के मन से जाता है हमारे गाँव की बेटी?

दूसरा अपने शिष्य का बखान ले जाओ चुपचाप।

सरजू मेरा शिष्य ऐसा वैसा नहीं।

दोनों क्या कहा?

(रामगुलाम और बिमला आकर सरजू को बचाते हैं।)

बिमला तब कहाँ थे तुम लोग जब मेरे साधु पिता की हत्या हुई थी—मेरी मां मारी गई जवार, जब मुझे छूना, स्पर्श करना क्या, मुझे देखना भी नहीं चाहता था। मुझे ऐसा चर्मरोग हुआ था कि जिस रास्ते से मैं गुजरती, लोग रास्ता छोड़ देते। मेरा शरीर-चर्म, पत्थर से ज्यादा जड़ था। इस न जाने गलता, न गलती। लोग मेरे मुंह पर कहते, मानकर औरों—बिमला कुलच्छनी है—इसे श्राप लगा है—स्पर्श-सुख इसके भाग्य में नहीं है। जिसके स्पर्श से आज मैं जड़ से चेतन हुई अब मुझे उससे कौन अलग कर सकता है?

(बिमला, रामगुलाम सरजू के साथ चलते हैं। यात्रा-गान)

राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई।
टूटी धनुइयां है
छोटे-छोटे हाथ हैं
एक रथ पे चढ़ा
एक पैदल जायी।
राम की लड़ाई आयी
हे भाई, हे भाई॥

चौथा दृश्य

(धनुषयज्ञ लीला)

जनक — धन्य है, सभा-मंडप दर्शकों से भर गया।

मसखरा — मेहमान लोग अपने-अपने आसनों पर जम गये।

जनक — योद्धा, राजागण, सभा मंडप जन, सुनें। इस धनुष का निर्माण विश्वकर्मा ने किया। यह शंकरजी को दैत्यों को मारने के लिए दिया गया।

मसखरा — ऐसा ही एक धनुष विष्णु के पास था। एक बार ब्रह्मा ने शिव और विष्णु में झगड़ा करा दिया।

जनक — दोनों में भयानक युद्ध हुआ। युद्ध विध्वंसकारी हो जाता, यदि देवता बीच में न आ जाते। उन्होंने कहा—इस धनुष का निर्माण असुरों को मारने के लिए हुआ था। वह उद्देश्य पूरा हो चुका। इसे अब स्मृति रूप में कहीं रख देना चाहिए। विष्णु ने अपना धनुष ऋचीक के पास और शंकर ने निमि के पुत्र देवरात के पास धरोहर रूप में रख दिया।

विश्वामित्र — ध्यान से सुनो। राजा जनक को यह पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिला। वह नित्य इसकी पूजा करते थे। एक दिन उनकी बेटी ने धनुष उठाकर उसे झाड़ पोंछकर एक और उत्तम स्थान पर रख दिया। राजा जनक चकित रह गये। उन्होंने संकल्प किया कि जानकी का विवाह उसी वीर पुरुष के साथ करूँगा जिसमें इस धनुष को उठाकर प्रत्यंचा चढ़ाने की शक्ति हो।

जनक — जो वीर इस धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाकर खड़ा करेगा, उसी से मेरी जानकी का विवाह बिना कुछ जाति विचार किए कर दिया जाएगा।

(राजागण अपनी अपनी कमर कसते हुए चलकर)

राजागण — यह क्या ? जानकी का ब्याह बिना कुछ जाति विचार किए कर दिया जाएगा !

मगध-नरेश — यह मुश्किल है थोड़ा।

काशी-नरेश — पुरुषार्थ।

(राजा लोग अपनी अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं।)

मसखरा — अब शक्ति प्रदर्शन कुर्सी पर नहीं मंच पर।
किया है यह तमाशा जनक ने आज भारी रे।
जिसमें आयेंगे राजा लोग सज के भारी रे॥

(राजा लोग हँसते हैं।)

अरे हँसिए नहीं, चल कर आइए, धनुष उठाइए, अपनी हिम्मत आजमाइए और तारीफ का टोकरा कंधे पर ले जाइए।

(सपोले आते हैं।)

सपोले — मैं ही हूँ परशुराम इस लीला का।

(गडबडसिंह दौड़े आते हैं।)

गडबडसिंह — मैं हूँ परशुराम रामलीला का।

सपोले — शोर उठा है नाम जब मैं बोलता हूँ।

गडबडसिंह — तुम बोलते नहीं हकलाते हो।

सपोले — क्या कहा !

(दोनों फरसा लेकर एक-दूसरे पर प्रहार करने को होते हैं। राजा जनक के रूप में रमई आकर।)

रमई — लड़ो नहीं, लड़ो नहीं, ठीक है। इस रामलीला में दो परशुराम होंगे। एक दाहिनी ओर खड़ा होगा, दूसरा बायीं ओर।

सपोले — मैं लेफ्टिस्ट हूँ, बायीं ओर खड़ा होता हूँ। जहाँ जाता हूँ इनकलाब करता हूँ।

गडबडसिंह — इसकी खाल मोटी है। इसके लिए इनकलाब बन्दर की रोटी है।

मसखरा — सावधान, चुप रहिए, जब आपकी बारी आये तभी बोलिये।

गडबडसिंह — तुम हकलाते हो, इसलिए केवल मूक अभिनय करोगे। संवाद मैं बोलूँगा।

सपोले — (हकलाते हुए) यह किसका फैसला है ?

रमई — मेरा।

(संगीत बजता है।)

मसखरा : मिला है यह तमाशा देखने को आज भागों से।
खिंचे आये हैं राजा कच्चे धागों से॥

जनक : अब वीर पुरुष एक-एक कर शिव-धनुष के पास आयें।
अपने भुजबल और पराक्रम को आजमायें॥

चोलरसिंह : ये न समझो मेरी इस बात में गहरी है।
सीता-स्वयंवर में सीता की उपस्थिति जरूरी है॥

जनक : ठीक कहा, यह हमारी भूल है।

गपोले : अपने ही आदमी हैं।

गड़बड़सिंह : सभी पेट में चोलर काट रहे हैं।

मसखरा : ऐ, चुप रहो।

गपोले : चौप्प!

मसखरा : रंगभवन में जानकी पधार रही हैं।

(गायन उभरता है। जानकी दो सखियों सहित धीरे-धीरे पधारती हैं।)

जानि सुअवसर सीय तब पठई जनक बोलाइ।
चतुर सखी सुन्दर सकल, सादर चली लवाइ॥
सिय शोभा नहीं जायी बखानी,
जगदम्बिका रूप गुन खानी॥
उपमा सकल मोहि लघु लागी,
प्राकृत नारि अंग अनुरागी॥
जो पटतरिअ तीअ सम सीया,
जग असि जुवति कहाँ कमनीया॥

(विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण आते हैं।)

मसखरा : बोलो, सियावर रामचन्द्र की जय।

गपोले : मैं नहीं बोलूँगा जय-जयकार!

गड़बड़सिंह : ऐसे परशुराम को धिक्कार।

जनक : यह जनकपुर का सौभाग्य है। विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण यहाँ पधारे हैं। देश-देश के राजाओं के आगमन से हम धन्य हुए हैं। जानकी के कारण ही यह सौभाग्य है। यह स्वयंवर जानकी का धर्म है। जो उठावे शिवधनुष वही पुरुष वर है।

विश्वामित्र : यह पूरा जगत धनुषयज्ञ लीला है। जीवन और समाज धनुष है—जो इसे उठाकर प्रत्यंचा कस दे, वही पुरुष है। यह धनुष शिव का है। सागर-मंथन में जब विष निकला तो चारों ओर हाहाकार

मच गया। सबकी इच्छा अमृत पीने की, विष कौन पीये? जिस शिव ने पिया उस विष को, उसी का पिनाक है यह। जो अपने समय सागर-मथन का विष पीने वाला होगा, वही उठायेगा इस धनुष का।

मसखरा — कौन है वह वीर जो इस धनुष को उठाये—राजा जनक की चिन्ता मिटाये?

मगध-नरेश — मैं हूँ वह वीर जो इस धनुष को उठाऊँगा।

काशी-नरेश — ऐसे धनुष बहुत उठाये हैं।

जनक — आइये, एक-एक कर अपने पराक्रम दिखाइये।

मसखरा — उठिये। चलिये। सब डर रहे हैं कि हँसी होगी। भूल गये हैं कि यह धनुषयज्ञ लीला है। जो अपने-आपसे बाहर निकल आवेगा, कर्म तो उसी के लिए होगा लीला। राम-लक्ष्मण के अलावा सब डर रहे हैं, क्योंकि अपनी ही सीमा में सभी मर रहे हैं। तो भइया, संगीत बजाओ। नेउर, लखपतिया को लीलामय बनाओ।

(संगीत बजता है।)

अरे नेउर, भूल जाओ, तुम नेउर हो। इस वक्त कश्मीर के राजा हो।

(संगीत गायन)

रंगभूमि जब सिय पगु धारी,
देखि रूप मोहे नर-नारी॥
सिय चकित चित रामहिं चाहा,
भए मोहबस सब नरनाहा॥
गुरुजन लाज समाजु बड़,
देखि सिय सकुचानि॥
लोकि विलोकन, सखिन तन,
रघुबीरहि डर आनि॥

मसखरा — बस, बस, बन्द करो गाजा-बाजा।
धनुष उठाने आते हैं चीलरसिंह राजा।

चीलरसिंह — अरे ओ लखपतिया, सभाल मेरा पट,
देता हूँ धनुष को एक चपेट।

(लखपतिया जो इस समय काशी-नरेश बना बैठा है।)

लखपतिया — हेश, हेश। लखपतिया है इस वक्त काशी-नरेश।

मसखरा — तो महाराज, मैं बन्द कर दूँ आपका गेट।
सभालता हूँ आप का पेट।

(चीलरसिंह धनुष उठाने चलते हैं, बार-बार गिरते और लुढ़कते हैं।)

चीलरसिंह : देखना, अन्त मे विजय मेरी ही होगी।

गपोले : बहुमत हमारा है।

गडबड़सिंह : हाय, धड़ाम से गिर गया बेचारा है।

मसखरा : देखिये, यहाँ कोई क्रिकेट का खेल नही हो रहा है कि आप लोग कमेंट्री करते जा रहे हैं। चलिये एक बार और।

चीलरसिंह : हर्गिज नही। इस धनुष मे है कोई चक्कर।

मसखरा : तो हो जाइये रफूचक्कर।

चीलरसिंह : यह भ्रष्टाचार है। इसकी जाँच के लिए कमीशन बैठे। जाँच-आयोग, यह मेरी माँग है। मैं इस सवाल को जनता मे उठाऊँगा। इस संघर्ष को सडक पर ले आऊँगा। गपोले, चलो, आओ मेरे साथ।

गपोले : इतनी मुश्किल से परसुराम का पार्ट मिला है, आप चलिये, मैं अपना पार्ट पूरा करके आऊँगा, फिर मजा चखाऊँगा।

(चीलरसिंह का प्रस्थान।)

मसखरा : सावधान ! अब पधारते हैं काशी-नरेश।

काशी-नरेश : कहाँ है धनुष शिव का ?

गडबड़सिंह : अरे लखपतिया, तुझे कम दिखायी पडता है रे ?

काशी-नरेश : किसने कहा मुझे लखपतिया, तोडकर मसल दूँगा जैसे कद्दू की बतिया।

मसखरा : नाराज मत होइये, काशी-नरेश। यह है धनुष, कीजिये क्लेश।

(धनुष उठाने में तरह-तरह के प्रयत्न और असफल होकर)

काशी-नरेश : आश्चर्य है, यह धनुष उठता क्यों नही ?

मसखरा : महाराज, जाकर थोड़ा दूध पी आइये।

लखपतिया : यह धनुष जगह-जगह से टूटा है, तभी यह उठाये उठता नही।

मसखरा : महाराज, अब प्रस्थान कीजिये।

लखपतिया : वह आ रहा है बाणासुर के साथ रावण, ध्यान दीजिये।

(रावण और बाणासुर हँसते हुए आते हैं।)

रावण : हम सबसे पहले आये थे, पर आकाशवाणी सुनते ही चले जाना पड़ा था।

बाणासुर : हा-हा-हा !

रावण : अरे, यह क्या सचमुच जनक का दरबार है ? जानकी के धनुष-

यज्ञ का शृंगार है ? यही काई नृत्य-संगीत नही। कहाँ है राजा जनक ?

जनक स्वागत है लका नरेश का।

रावण धनुषयज्ञ म इतनी उदासी क्या ?

गडबडसिंह महँगाई बहुत है।

मसखरा ए मुँह बन्द।

(जनक ताली बजाते है। एक के बाद दूसरी नर्तकी का नर्तन गायन।)

वाह-वाह ! खुश रहो, आजाद रहो ! यहाँ रहो या इलाहाबाद रहो।

नेताई यह किसके घर की है ?

गपोले शहर स लायी गयी है।

नेताई और दूसरी ?

गपोले लखपतिया की साली है।

नेताई भाई, अपने देश म कितना सौंदर्य है ! कितनी कला है !

मसखरा लीला सवाद बालिय। नाच-गाना बन्द।

(लीला अभिनय)

रावण तुम कौन ?

बाणासुर स्वनाम धन्य महाराज बलि का पुत्र बाणासुर हूँ। तुम कौन ?

रावण पौल (नहीं उच्चारण कर पा रहा है) पौल. पौल मुझसे नही बोला जाता। मैं रावण का पार्ट नही करना चाहता था।

मसखरा अच्छा, इस सवाद को काट दिया, आगे बोलो—मैं जगतविजयी दशानन हूँ।

बाणासुर पर असली नाम क्या है ?

रावण लोग मुझे रावण कहते हैं।

बाणासुर कैसा रोने वाला नाम है।

रावण मूख, मैं दूसरा को रुलाता हूँ।

बाणासुर अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना !

रावण मरी वीरता दिक्पाला स पूछो। देवगण मेरे डर से घर छोडकर भागते हैं।

बाणासुर तो उठाओ यह धनुष।

रावण इसे कब का उठा चुका। मैं बिना धनुप चढाये सीता का चरण करूँगा।

मसखरा चरण नहीं, वरण।

रावण अरे चरण वरण म क्या अन्तर ?
तुम मेरा क्या कर सकत हो ?
वाणासुर . मैं वही करूँगा जो सहस्रार्जुन ने किया था।
रावण सावधान, जीभ सभालकर बात करना।
मैं तुम्हे द्वद युद्ध के लिए आमन्त्रित करता हूँ।
वाणासुर तुम्हारा जैसा गधा का सिर है वैसी ही तुम्हारी बातें भी है। मूख, यह स्वयवर है, युद्धभूमि नही।
रावण क्या कहा ?
शाहजी अरे भाई, यह लीला सवाद है, बुरा मत मानना।
नेताई हमे जान बूझकर परस्पर लडाया जा रहा है। हमारी एकता खतरे मे है।
मसखरा अरे रावण, अपना सवाद बोल !
रावण : क्या कहा ?
वाणासुर यह स्वयवर है युद्धभूमि नहीं।
रावण तो फिर कभी देखा जायेगा।
वाणासुर देखा कब जायेगा ? फैसला तो धनुष के हाथ है। अपना पराक्रम क्यों नही दिखाते ?
रावण पहले तुम !
वाणासुर पहले आप।
रावण नही।
वाणासुर जी नही।
रावण नही तो पछताओग।
वाणासुर यह मेरे गुरु का धनुष है। मै इसके उठाने का अधिकारी नही। सीता माता के समान है।
नेताई अये बनिया बकरात विमता माता समान है और रामगुलाम ?

(सगीत : यात्रा गान और यात्रा)

आज मोहि रघुवर की सुधि आयी।
आगे-आगे राम चलत है
पीछे लछिमन भाई।
ताके पीछे मातु जानकी
विपदा कही न जायी।
आज मोहि रघुवर की सुधि आयी।

सरजू : अरे, तुम पहचानो, उन्हें क्या कहते हो ? ये कोई इस गाँव के हैं। तुम हमें पहचानो—जैसे तुम्हारे बाप-दादा पहचानते थे। वे होते तो गाँव-जवार का यह हाल न होता। वे न्यायपुरुष थे।

नेताई : देखिये साहब, हम लोगों के पास इतना फजूल का वक्त नहीं है। कुल पाँच दिन रह गये है चुनाव के—हमें बहुत काम करने है।

हाकिम : आप लोग जा सकते हैं।

नेताई : पर मामला तो हमारा है।

हाकिम : आपका नहीं, रामगुलाम का है।

वीलरसिंह : रामगुलाम के पास अपने हक को साबित करने के लिए कोई प्रमाण नहीं है।

हाकिम : गवाह तो है।

नेताई : देखिये हाकिम साहब, इलेक्शन-दौरे पर मन्त्रीजी आ रहे हैं—हमारे पास इतना वक्त नहीं है।

हाकिम : आप इलेक्शन का दबाव मेरे ऊपर डालना चाहते हैं ? इलेक्शन अलग है। चकबन्दी उससे अलग है।

नेताई : आप समझते नहीं। इलेक्शन का असर हर चीज पर है। हर चीज का असर इलेक्शन पर है।

हाकिम : मुझे मेरा काम करने दीजिये।

नेताई : हमें भी अपना काम करने दीजिये।

हाकिम : मैं सरकारी मुलाजिम हूँ।

नेताई : सरकार हम बनाते हैं।

हाकिम : नहीं, सरकार ये बनाते हैं—जिन्हें सरकार कोई फायदा नहीं पहुँचा पाती। बीच ही में तुम लोग सब डकार जाते हो।

नेताई : आपको हमारी ताकत का पता नहीं।

वीलरसिंह : बहुत देखे है, ऐसे हाकिम-अफसर।

हाकिम : चपरासी !

चपरासी : जी साहब !

हाकिम : यह लो चिट्ठी। थाने जाओ। पुलिस-ताकत के साथ फौरन आयें थानेदार साहब। जाओ।

शाहजी : अरे साहब, आप तो नाराज हो गये। मैं इनकी तरफ से क्षमा चाहता हूँ।

हाकिम : तुम इनकी तरफ से कमाई भी करते हो।

नेताई : सर, मेरे मुँह से निकल गया—इलेक्शन के काम से दिमाग घूम गया।

पाँचवाँ दृश्य

रामगुलाम : हाकिमजी, मेरे पिता के मरते ही इन्होने मेरी सारी जमीन बेदखल कर ली। माई और दीदी खाने के लिए मोहताज। मैं भागकर कलकत्ता गया।

गपोले : चकबन्दी के हाकिम के पास इतनी फुर्सत नही, तेरी बकवास सुनने के लिए।

हाकिम : फुर्सत है। बोलो, जरा नमक-मिर्च कम लगाओ।

रामगुलाम : कलकत्ता से लौटकर देखा—मेरे खेत मे इनके हल चल रहे हैं। अपने हक के लिए मैंने विरोध किया। पंचायत बुलायी। पंचायत मे जो मेरे हक के लिए बोला उस पर लाठी चल गयी।

चीलरसिंह : ऐसे ही अगर तेरा हक छीन रहा था तो मुकदमा क्यो नही किया ?

हाकिम : क्या मजाक करते हो, यह और मुकदमा। अदालत, कचहरी, आप लोगों के लिए है।

नेताई : ठीक है। अपने हक के लिए कोई कागज-पत्तर है ?

रामगुलाम : कैसा कागज-पत्तर! यही मुंशीजी और रमई काका मेरे गवाह हैं।

(सरजू आते हैं।)

शाहजी : लो, यह भी सूंघते-सूंघते पहुँच गये। इन्हे पहचान रखें, हुजूर। यह इसके गुरु हैं। यह जितना ऊपर हैं, उतना ही जमीन के नीचे है। पूरा देश घूमे है, पैदल। अँग्रेजी, फारसी, संस्कृत पढते-बोलते हैं। जितने ज्ञानी उतने ही साहसी।

सरजू : अरे, तुम पहचानो, उन्हें क्या कहते हो ? वे कोई इस गाँव के हैं। तुम हमें पहचानो—जैसे तुम्हारे बाप-दादा पहचानते थे। वे होते तो गाँव-जवार का यह हाल न होता। वे न्यायपुरुष थे।

नेताई : देखिये साहब, हम लोगों के पास इतना फजूल का वक्त नहीं है। कुल पाँच दिन रह गये हैं चुनाव में—हमें बहुत काम करने हैं।

हाकिम : आप लोग जा सकते हैं।

नेताई : पर मामला तो हमारा है।

हाकिम . आपका नहीं, रामगुलाम का है।

चीलरसिंह . रामगुलाम के पास अपने हक को साबित करने के लिए कोई प्रमाण नहीं है।

हाकिम : गवाह तो है।

नेताई . देखिये हाकिम साहब, इलेक्शन-दौरे पर मन्त्रीजी आ रहे हैं—हमारे पास इतना वक्त नहीं है।

हाकिम · आप इलेक्शन का दबाव मेरे ऊपर डालना चाहते हैं ? इलेक्शन अलग है। चकबन्दी उससे अलग है।

नेताई . आप समझते नहीं। इलेक्शन का असर हर चीज पर है। हर चीज का असर इलेक्शन पर है।

हाकिम . मुझे मेरा काम करने दीजिये।

नेताई : हमें भी अपना काम करने दीजिये।

हाकिम · मैं सरकारी मुलाजिम हूँ।

नेताई : सरकार हम बनाते हैं।

हाकिम नहीं, सरकार ये बनाते हैं—जिन्हें सरकार कोई फायदा नहीं पहुँचा पाती। बीच ही में तुम लोग सब डकार जाते हो।

नेताई : आपको हमारी ताकत का पता नहीं।

चीलरसिंह : बहुत देखे हैं, ऐसे हाकिम-अफसर।

हाकिम : चपरासी !

चपरासी . जी साहब !

हाकिम : यह लो चिट्ठी। थाने जाओ। पुलिस-ताकत के साथ फौरन आयें थानेदार साहब। जाओ।

शाहजी : अरे साहब, आप तो नाराज हो गये। मैं इनकी तरफ से क्षमा चाहता हूँ।

हाकिम . तुम इनकी तरफ से कमाई भी करते हो।

नेताई · सर, मेरे मुँह से निकल गया—इलेक्शन के काम से दिमाग घूम गया।

चौलरसिंह — सर, तीन रात से हम सो नही पाये हैं—एक-से एक बड़े नेता इधर दौरा कर रहे हैं।

हाकिम — आप किस पार्टी के लिए काम कर रहे हैं ? आप किस दल के हैं ?

चौलरसिंह — हम निर्दलीय हैं, सर ! आपसे क्या परदा, जिधर हवा देखते हैं उधर ..ही ही ही !

हाकिम — तभी आप लोग केवल पुलिस की ताकत स डरत है।

चौलरसिंह — फिलहाल !

हाकिम — क्यो, रामगुलाम ?

रामगुलाम — हाँ साहब, आजादी तो इन्ही लोगों की है।

हाकिम — याद रखिये—यह आजादी आप ही लोगों को पागल बना देगी। आजादी दो तरह की नही होती—एक तुम्हारी दूसरी रामगुलाम की, यह नही है आजादी। यह भय है—ताकत का भय। एक नही, जब सब एक-दूसरे से निर्भय होगे, तब आयेगी नही, होगी आजादी। वहाँ होगा स्वराज्य। हम पर दूसरे का राज नही—यह तो आजादी है—अपने पर अपना राज्य, स्वराज्य...सब अपने अधीन, स्वाधीन।

नेताई — बकवास !

चौलरसिंह — उसके लिए जन-जागरण चाहिए।

सरजू — *जैसे आप लोग जगे है वैसे ?*

नेताई — हाँ, क्यो नही ?

सरजू — *आप लोगो की तरह अगर सब जग जायेंगे—अभी तो गाँव म* तीन पार्टियाँ है, तब कम-से कम बहत्तर पार्टियाँ बनेंगी। आप कुल छ ही आदमी हैं।

रमई — फिर तो हर गाँव मे पुलिस थाना खुले, जभी काम चले। यही *समझते हो कि आप लोग जगे हुए है ?*

नेताई — जरूर !

सरजू — घोर अन्धकार की निद्रा म सोये हुए हो। जगी है केवल तुम्हारी इच्छाएँ, भय, क्रोध, अहकार—और इसी पर सारी भ्रष्ट राजनीति खडी है। *ताकि कही असली राजनीति न शुरू हो—तभी* सबकी आजादी अलग-अलग है—क्योकि सबकी इच्छाएँ, भय, क्रोध, अहकार अलग-अलग हैं।

शाहजी — यह तो ऐसे वकत है, साहब, एक विनती करूँ ? हमारे मन्त्रीजी *अच्छा नही बोल पाते—आप चुनाव-भाषण दीजिये—आपको* मोटी रकम मिलेगी, यह मेरी जिम्मेदारी है। अरे, आप हँस रहे

हैं। क्या रखा है इस नौकरी मे—गाँव मे धूल फाँक रहे हैं बेमतलब।

नेताई : ठीक बात है, सर।

शाहजी सरकार, जरा इधर आ जाइये। एक बहुत जरूरी बात है। आप तो ऊँचे विचारों के हैं।

(दोनों अलग जाकर)

यह योजना हमने बतायी थी मन्त्रीजी से कि चकबन्दी के समय इलेक्शन हो। इलेक्शन फंड मे रुपयों की कमी नही रहेगी। चकबन्दी के दबाव मे सौ फीसदी वोट भी मिलेंगे। आम के-आम गुठली के दाम।

हाकिम तो मैं क्या करूँ ?

शाहजी आप ही के ऊपर तो सारा दारमदार है। आप अपनी मेहनत माँगाये तो ये सूद पर मुझसे रुपये कर्ज लेंगे। कर्जदार होंगे तो इन पर हमारा दबाव होगा। जिसका दबाव उसी का चुनाव, आप तो इतने समझदार हैं—थोड़ा कहना बहुत समझना।

हाकिम तो यह विष इतने नीचे तक फैल चुका है। सुनो, सरजू, रमई, रामगुलाम, इसने जो अभी मुझसे कहा है—वह भयंकर है। पर मेरे लिए पी-शवार्ग है।

नेताई सावधान !

शाहजी साहब, मेरी गरदन पर छुरी मत चलाइये। मैं बेकसूर हूँ—लाचार हूँ। मुझमे भूल हो गयी।

नेताई इस शत्रु से बात क्यों की ?

सरजू तुम लोग खुद ही अपने शत्रु। जो विष तुम लोगो मे लगा है, वह इस माटी मे न लग जाये, यही प्रार्थना है ग्राम-देवता से। जाओ, मेरे खिलाफ जा इकट्ठा हो करो। मैं गाँव गाँव की धूल अपने माथे पर लेकर इन सबसे कहूँगा—यह नही है आजादी। जागो, जानकी इस भूमि से पैदा हो चुकी है। उठाओ शिव धनुष, राम, वेधो इस अधकार को। जागो, ग्राम-देवता ! जागो ! !

हाकिम चुप रहो। जागो जागो। खुद जगे हो ? जब से आजादी मिली, कितना माल बटोरा ? कितनी ताकत हासिल की ? कुछ नही न, तभी इतनी ऊँची ऊँची बातें कर रहे हो।

सरजू तुम भी इन्ही के आदमी निकले।

हाकिम हम तो सरकारी आदमी हैं।

सरजू हमारा कौन है ?

हाकिम आँख खोलकर देखते क्यों नहीं, निर्बल का कोई नहीं होता। भजन गाते रहो—निर्बल के बल राम। चलो भाई, लंच का वक्त हो गया। अँगरेज चले गये, लंच और डिनर हमें दे गये।

(यात्रा चलती है। यात्रा-गान)

बम भोले शिव की बरात।
बम भोले शिव की बरात॥
कोई अजर कोई पजर
ऐसी अँधियारी रात।
बम भोले शिव की बरात॥
हिनहिनावें गनगनावें
भूत प्रेत पिसाच।
बम भोले शिव की बरात॥

छठा दृश्य

मसखरा धनुषयज्ञ मे, इस विघ्न के लिए हम क्षमा चाहते हैं। विघ्न आया है जाने के लिए। जब तक हमारे भीतर विघ्न विदारक भगवान विराजमान हैं तब तक ये सारे विघ्न नाशवान हैं। बजाओ संगीत। गाओ प्रभु का गीत।

(संगीत-गायन उभरता है।)

आज दिवस लेऊँ बलिहारा
मेरे घर आया राम का प्यारा।
आँगन कानन भवन भयो पावन
हरिजन बैठे हरिजस गावन।
कथा कहे अरु अरथ विचारें
आप तरे औरन को तारें।

नेताई बन्द करो यह पोपलीला। यहाँ न कोई रावण है, न राम है।

मसखरा है अभी तो कह रहे हो नहीं है।

रमई भाई धीरज से काम लो। नेताईजी, आप राम का पार्ट करना चाहते थे। आइये, बनिये राम! आइये! लीला करने का मतलब ही यही है कि कोई भी राम बन सकता है। राम का अवतार त्रेता युग मे हुआ था यह तो कथा है, पर सच्चाई यह है कि राम का अवतार आज भी होता है। जो चाहे वह राम हो सकता है।

नेताई इसका मतलब क्या है?

हीरा तुम्हारी राजनीति का मतलब क्या है ?

गपोले हे लक्ष्मण, चुप रहो, तुमसे मैं निपटूंगा ।

सरजू देखो नेताईजी, पहले यहां कितने धूमधाम से रामलीला होती थी । सारा गांव-जवार इससे मिलकर एक हो जाता था। पर उन्नीस सौ बासठ मे ग्राम-पचायत के चुनाव के नाम पर ऊपर से जो भ्रष्ट राजनीति यहां आयी, उस दिन से रामलीला बन्द, कथा-भागवत, गाना-बजाना, अखाडा-कबड्डी—सब खतम। सबका एक साथ बैठना बोलना बन्द। तब से जो-जो इस गांव-जवार मे हुआ, उसे याद करने से क्या फायदा, हमने यही पाया कि कुछ ऐसा करें कि उस बहाने हम एक साथ बैठें, बोलें। ऐसा हो कुछ कि जिसमे सबकी साझेदारी हो।

नेताई ये मेरे दुश्मन हैं।

सरजू पर तुम्हारे ही तो हैं।

मसखरा ये बातें यहां कहने की नही हैं। रामलीला मे देरी हो रही है।

सरजू पिछले छत्तीस सालो से ये बातें कहने-सुनने का समय और स्थान कहां मिला ? सब अपने अपने घरो मे घुस गये।

गपोले भाई, लेक्चर बन्द करो। देरी हो रही है।

नेताई तेरी क्या राय है ?

गपोले वाह वाह ! आज मुझसे राय मांग रहे है। ऐसा है नेताजी, आकर जरा जनता मे बैठ जाओ और देखो मेरा पार्ट।

गडबडसिंह पता चला जायेगा कि नेता के बारे मे जनता क्या सोचती है।

नेताई हुअँ ! जनता कायर है।

मसखरा तभी तो नेता महाकायर है। सबूत चाहिए ?

नेताई क्या कहा ?

मसखरा मैंने कुछ नही कहा। उन्होने कहा। उन्होने नही नही, उन्होने।

नेताई सबूत मैं क्या दूं अवसर स्वय ही दे देगा। कुछ ही क्षणो मे यह धनुष उठेगा। पुराना धनुष है, इसे तोडना क्या बात है ? सैकडो जहां तोड डाले इसकी क्या औकात है ?

मसखरा धन्य है महाराज ! पार्ट अच्छा कर रहे है। जमे रहिये। अरे ! आप लोग जा रहे हैं।

(रावण और बाणासुर जाते हैं।)

चलो भाई, सकट टला, सगीत मारो।

(सगीत।)

जथा सुअंजन अंजि दृग, साधन सिद्ध सुजान ।
कौतुक देखहिं सैलवान, भूतल भूमि विधान ॥

मसखरा सावधान, अब आते है कश्मीर के राजा ।

(कश्मीर के राजा धनुष उठाने मे असफल होते हैं।)

क० राजा इस धनुष मे क्या रखा है ? नही उठाता इसे।

मसखरा क्या ?

क० राजा नही उठाता, मेरी मरजी।

मसखरा कई बार उछली लोमडी, पर जब अगूर हाथ न आये तब बोली मुँह बनाकर—खट्टे हैं, अगूर कौन खाय !

जनक हाय, इस धनुष को अब कोई नही उठायगा हाय यह दुख और दारिद्रय सहा नही जाता। क्या ऐसा कोई पुरुष नही ?

अब जनि कोउ भाखे भटमानी
वीर विहीन मही मैं जानी।
तजहुँ आस निज निज गृह जाहू
लिखा न विधि वैदेहि विवाहू ।

लक्ष्मण सुनहु भानुकुल पकज भानू
कहो सुभाउ न कछु अभिमानू।
जो तुम्हार अनुशासन पाऊँ,
कदुक सो ब्रह्माण्ड उठाऊँ।
तोरो छत्रक दड जिमि तव प्रताप बल नाथ।
जो न करूँ प्रभु-पद-सपथ कर न धरूँ धनु हाथ ॥

जनक जवानी मे इतनी ताकत है अभी क्या इसे मैं मान लूँ ? जो कहते हैं कर सकेंगे भी, क्या इसे सच मान लूँ ?

लक्ष्मण जनक, देख लें कि अभी वीरता है जवान म।
दम ही क्या है उस पुरानी कमान मे।
क्षण भर म यह धनुष भू पर होगा कि आसमान मे।
चुटकियों मे उठा न और तोडूँ आनआन म।

गपोले (सहसा) वाह बेटा लक्ष्मण चन्द।
अभी करता हूँ तेरी बोलती बन्द।

मसखरा यह क्या असभ्यता है— जब देखो तब बीच म टपक पडते हो।

गपोले क्या कहा, असभ्यता ? नेताजी जरा बताइय तो सही, क्या मतलब होता है असभ्यता का फिर मैं बताऊँ।

नेताई असभ्यता—अ माने आ, और सभ्यता माने सभ्यता—मतलब

सभ्यता आ। यह सरासर गाली है। नही, नही, थोडा विचार करना होगा।

(यात्रा और गान)

बम भोले शिव की बरात।
बम भोले शिव की बरात।।

सातवाँ दृश्य

(मन्त्रीजी और लोग।)

नेताई अरे मन्त्रीजी आये हैं, कुछ बैठने को लाओगे या टुकुर टुकुर मुँह देखोगे ?

शाहजी महाराजजी, आप मेरे दरवाजे पर बैठें, वहाँ सारा प्रबन्ध है।

हीरा मन्त्रीजी जनता में है। जनता म आये हैं। बैठिये श्रीमानजी।

(लखपतिया की पीठ पर बैठना।)

नेताई हाँ, बोलो, किसे क्या शिकायत है ? किस किस चीज की जरूरत है ?

सरजू जिनके ले आने से आप यहाँ आये हैं उनके सामने कुछ कहने की किसी को कोई हिम्मत नहीं है।

मन्त्री वाह-वाह, कितनी अच्छी भाषा है। अनुप्रास की कितनी सुंदर छटा है—'कुछ कहने की किसी को कोई' ! वाह-वाह !

नेताई कहने की हिम्मत नहीं है तो लिखकर दे दो।

मन्त्री हाँ, सुंदर सुझाव है।

नेताई हाँ, हाँ, सुन्दर सुझाव है।

शाहजी नहीं तो हम लोग हट जायें।

गपोले या गाँव छोड़कर चले जायें।

मन्त्री : कितने उच्च विचार हैं !

शाहजी देखिये, आप लोग थोड़ा धीरे बोलिये, मन्त्रीजी बहुत कोमल स्वभाव के हैं। इन्हें सात बार दिल के दौरे पड चुके हैं। दिल

माने 'हार्ट' ।

रमई सबसे गम्भीर दुख है रामगुलाम का। सबसे अधिक अन्याय इस पर हुआ है। और यही चुप है।

मन्त्री अरे, आजाद देश के नागरिक हो। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

रामगुलाम क्या कहा साहेब, कुछ समझ मे नही आया।

मन्त्री ओह भाषा क्लिष्ट हो गयी—अरे, अन्याय के खिलाफ बोलो, बोलो-बोलो। आवाज बुलन्द करो। अब भी मेरी भाषा क्लिष्ट है?

(रामगुलाम चुप हैं।)

यह क्या कहना चाहता है? ओह, बहुत कम बोलता है।

सरजू गाँव में सबसे सीधा, चरित्रवान पर सबसे ज्यादा अन्याय का शिकार यही है। चोरी करावें ये, माल बेचें ये, और जेल काटे रामगुलाम।

मन्त्री तो रामगुलाम राजनीति में क्यों नही आता? जेल और राजनीति का गहरा सम्बन्ध है।

सरजू हुजूर, क्या कहा?

मन्त्री आप लोग जरा उधर हट जाइये। मैं इन लोगो से कुछ जरूरी बात . ।

(नेताई, साहजी, गपोले एक ओर हट जाते हैं।)

बात यह है कि किसी और को अब अपना आदमी बनाना चाहता हूँ। रामगुलाम कैसा आदमी है? इसकी जाति?

सरजू पिछड़ी हुई।

मन्त्री इसकी ताकत?

सरजू सच्चाई सचरित्रता, आत्मविश्वास.. ।

मन्त्री बेकार वक्त बरबाद मत करो। इसके साथ इस जवार के कितने गुडे, डाकू बदमाश, पैसे वाले, और कातिल हैं?

सरजू कोई नही कोई नही।

मन्त्री फिर बेकार, बेमतलब है रामगुलाम। मुझे इस क्षेत्र से एक ऐसे नवयुवक की जरूरत है, बल्कि बडी बेसब्री से तलाश है जिसके पास ताकत हो—लोगो को डराने वाली, खरीदने वाली ताकत। मैं उसे एम० एल० ए० बनाऊँगा, अपना आदमी।

लखपतिया (उछल पड़ता है) मैं हूँ, सर! आप मेरे ऊपर हाथ रख देंगे तो मेरी ताकत का अन्त नही रहेगा। मैं आपकी तन-मन धन से सेवा करूँगा। जो आप इशारा कर देंगे, वही होगा।

मन्त्री शाबाश !

लखपतिया मैं एक एक को दिखा दूँगा अपनी ताकत। नेताई का कतल, शाहजी को जेल, गपोले को भीख मँगा दूँगा। यहाँ से दिल्ली तक डका न बजा दूं तो मेरा नाम लखपतिया नहीं। सर, मैं हाई स्कूल म सात बार फेल। चाकू छुरा, पिस्तौल, कट्टा चलाने मे होशियार, बम बनान म इक्सपर्ट। हडताल घेराव, मारपीट, चोरी-चडाली मे इधर कोई मेरा सानी नही। बस, एक बार आपसे टिकट मिल जाये।

मन्त्री नही नही, मुझे ऐसा आदमी नही चाहिए।

लखपतिया क्या ?

मन्त्री मुझे ऐसा चाहिए जो यहाँ से प्रदेश की राजधानी तक ही सीमित रहे। तुम तो दिल्ली तक डका बजान वाले हो। ऐसा नही चाहिए मुझे।

लखपतिया सर, ऐसी कौन सी कमी है मुझमे ?

मन्त्री तुम जरूरत से ज्यादा आत्मसम्मानहीन आदमी हो—यह खतर-नाक है मेरे लिए। चालीस वर्षों से यही मेरा जीवन रहा है। अब आप लोग इधर आ सकते है। हाँ तो इस गाव जवार का असली मामला क्या है ? मेरे पास वक्त नही है। कहो, बखटक कहो।

कालू आइये सर, आरामकुर्सी पर। मुझे टिकट दीजिये, फिर देखिये कमाल। टेढी टोपी लाल रूमाल।

मन्त्री मिलते जुलते रहना, देखूगा।

कालू तो बैठिये।

(कालू की पीठ पर बैठकर)

मन्त्री भाई कोई बिमला नाम की लडकी है।

सरजू यह है बिमला। रामगुलाम ने इसे अपने जीवन म शरण दिया—यही उसका अपराध हो गया।

रामगुलाम नही, बिमला ने मुझे अपने जीवन मे शरण दिया।

मन्त्री विचार उत्तम हैं।

सरजू कही कुछ भी इनकी मरजी के खिलाफ होता है य उसे नष्ट करने की कोशिश करते हैं।

मन्त्री भाई, इस कुर्सी में खटमल बहुत है। दूसरी लाओ।

गडबडसिंह कुर्सी को भाडे देते हैं, साहेब। (झाडता है) खटमल झड गये। बैठिये, श्रीमानजी।

मन्त्री : (बैठते हुए) यह बहुत पिछड़ा हुआ इलाका है।

नेताई : कोई डेवलेपमेंट ग्राट हो जाये, सर।

मन्त्री : *बढ़िया स्कीम बनाकर दो, फर्स्ट क्लास।*

शाहजी : इलाइची लीजिये, सर। (खाते हैं।) पान-सिगरेट कुछ भी नही हाँ, सादा जीवन उच्च विचार। महान आत्मा। जी, सर।

मन्त्री : हाँ, तो क्या कह रहे थे आप ? जरा नोट करते चलना जी। बडी उमस है।

(चौलरसिंह और नेउर धोती से हवा करते हैं।)

सरजू : थाना-ओ-इजलास से मिलकर अब ये लोग भयंकर केस चलाने की स्कीम बना रहे हैं विमला और रामगुलाम पर।

मन्त्री : *यह विमलादेवी कौन हैं ? बार-बार यह नाम सुन रहा हूँ।*

विमला : मैं हूँ विमला। रामगुलाम को साथ लिये हुए एक बार आपके बँगले पर मिली थी। इस गाँव-जवार की पूरी बात मैंने बतायी *थी। हमने आपको एक आवेदन-पत्र भी दिया था।*

मन्त्री : आवेदन-पत्र अँग्रेजी मे था या हिन्दी मे ?

रामगुलाम : हिन्दी में।

मन्त्री : (उठते हुए) फिर बताइये, मेरी क्या है गलती ? आवेदन-पत्र जब हिन्दी मे हो तो मैं क्या कर सकता हूँ ? मेरी लाचारी आप लोग नही जानते। आखिर कोई तौर-तरीका होता है। पूछता हूँ—उस आवेदन-पत्र पर तुम्हारे एम० एल० ए०, एम० पी० के दस्तखत थे ? बोलो, जवाब दो।

विमला : (रामगुलाम को झकझोरती हुई) बोलो, बोलते क्यो नही ? बोलो। बोलते क्यो नही ? जवाब दो।

(रो पड़ती है।)

रामगुलाम : रो नही, जिसे यहाँ न्याय नही मिला, उसे स्वर्ग मे न्याय मिलेगा—यह सोचते-सोचते अब यहाँ पहुँच चुका हूँ—वह स्वर्ग इन्ही का झूठ है। मै इनसे *क्या बोलूँ ? इन्हे क्या जवाब दूँ ? जवाब तो* इन्हे देना था। उल्टे मुझसे जवाबदेही ! भगवान ने किसी को पीठ पीछे आँख नही दी। सब-कुछ सामने दिख रहा है। मैं मुड-मुडकर *इन्ही तीस-पैंतीस वर्षों को ही देखता रहा। तभी हमारी यह दशा* हुई। इस गाँव-जवार का सत्यानाश हुआ। एक-एक कर सबके धनुष हाथ से छूटते चले गये। यह सम्पूर्ण धनुष टुकडे-टुकडे हो *गया। कोई उसे उठाकर यह कहने वाला नही था, यह सुन्दर विराट धनुष हमारे पुरखो की कठिन तपस्या और त्याग से बना*

है—इसे बाँटने, तोड़ने, अपवित्र करने का किसी को कोई अधिकार नहीं। एक ने कहा तो उसे सबके सामने गोली मार दी। उसके मुँह से निकला—हे राम! दूसरे ने कहा तो उस यात्री को गला घोंटकर मार दिया—जिसके मुँह से निकला—यह मेरा नहीं, सबका है, इसलिए सम्पूर्ण राष्ट्र का है। कुछ नहीं होता तीस-पैंतीस, पचास-सौ वर्ष—इस भारत माँ के लिए। यह फिर हम शंकर-पिनाक देगी।

सरजू : वह पिनाक ही तो टूटा हुआ है जातियों में, वर्गों-सम्प्रदायों में। तरह-तरह से तोड़ा है, ताकि इसे कोई उठा न सके इनके खिलाफ।

मन्त्री . भाई, ऐसी बात क्यों करते हो? मेरा तो दिल धड़कने लगा। मुझे अस्पताल ले चलो फौरन-फौरन!

(लोग उन्हें कंधे पर उठाकर ले जाते हैं।)

रामगुलाम : धर्म अतीत में नहीं, केवल वर्तमान में है। यह शिव धनुष हमारा वर्तमान है। अगर हमने इसे अनुभव नहीं किया तो हम अधर्म जीवन का बोझ ढोते हैं।

सरजू : फेंक दो अपने मृत को। मृत सत्ता को जब तक अपने सीने से चिपकाये रखोगे, सत्य नहीं पाओगे।

विमला क्या है सत्य?

सरजू : जो तुम्हारा है।

विमला . क्या?

सरजू : तुम्हारा जीवन।

विमला : भय, क्रोध, हिंसा, नफरत, दुख, निराशा...।

सरजू यही...यही सत्य है। इन सब चीजों का समझना ही सत्य है। इनके प्रति किसका कैसा आचरण है, यही है जीवन-सत्य . शंकर-धनुष।

विमला हे राम!

सरजू राम कोई दूसरा नहीं है। तुम हो राम, तुम हो। राम मृत सत्ता नहीं है जिसका सिर्फ नाम लिया जाये। राम जीवित सत्ता है। जितना जिया जाये उतना ही है जीवित। निर्बल का बल राम नहीं है। वह है ही नहीं तभी तो निर्बल हैं। अभाव को राम नहीं पूरा कर सकता। अभाव है तभी तो राजनीति भ्रष्ट है। अभाव है तभी तो इतनी दीनता है। राजनीति दीनता और अभाव से नहीं पैदा होगी। वह पैदा होगी एक-एक के आत्मबल से। एक-एक मिलकर

जितने जुड़ेंगे—उतनी गुना शक्ति बढ़ेगी। जितनी शक्ति बढ़ेगी, पीढ़ियों से चले आ रहे पाखंड और झूठ से यह समाज मुक्त होगा।

(यात्रा और यात्रा-गान)

जननी बिनु राम अब ना अवध मे रहिबै
राम बिना मोरी सूनो अयोध्या
लछिमन बिन ठकुरायी
सीता बिना मोरी सूनी महलिया
के अब दियना जलायी
जननी बिनु राम अब ना अवध मे रहिबै ॥

आठवाँ दृश्य

(संगीत उभरता है। गायक गाते हैं।)

देखि तजिअ ससय अस जानी,
भंजब धनुष राम सुनु रानी ।।
सखि वचन सुनि भै परतीती,
मिटा विषाद बढी अति प्रीती ।।
तब रामहि बिलोकि बैदेही,
सभय हृदय बिनवति जेहि तेही ।।

मसखरा हाँ तो, कोई है माई का लाल धनुष उठाने वाला ? हो तो आ जाये—नहीं तो बहुत फिरोगे—धनुषयज्ञ नहीं, नाटक है।

विश्वामित्र उठहु राम भजहु भव चापा। मेटहु तात जनक परितापा ।।

गपोले रमई काका का परितापा।

मसखरा फिर तुम बोले ।

गपोले भाई, मुँह से निकल गया।

रमई यह तुम्हारी आदत हो गयी है—जबान पर कोई लगाम नहीं। अगर फिर बोले, तो यहाँ से बाहर निकाल दूँगा। तुम लोग अपने-आपको समझते क्या हो ?

नेताई अपने-आपको क्या तानाशाह समझते हो कि दूसरे की जबान पर ताला लगा दो !

सरजू आजादी, तानाशाही—ये तुम्हारे शब्द है शब्द दो अर्थ एक।

नेताई तो उसे बोलने क्यों नहीं देते ?

और जिनका एक-दूसरे से शादी कर लेना चाहते थे, वैसे तो शादी करने की हिम्मत न थी, इसीलिए धनुषयज्ञ-लीला रची और इस बहाने शादी कर लेना चाहा। यह अधर्म है।

जेनाई : ऐसा नहीं हो सकता।

शास्त्री : हाँ।

विश्वामित्र : देखते क्या हो, राम ? युद्ध करो। लक्ष्मण, चलाओ धनुष। जहाँ ज्ञान-विज्ञान में, विश्वास-अन्धविश्वास में, गरीबों-अमीरों में, नीच-ऊँच में इतना अन्तर, इतनी दूरी है, वहाँ परिवर्तन युद्ध के बिना असम्भव है। युद्ध करो। शिव-धनुष पर चढ़ाओ बाण। रावण-वध करो, सीतापति राम। चलाओ शंकर-पिनाक—जानकी स्वतन्त्र हो! जानकी सीता माँ।

(युद्ध-संगीत। राम-रावण-युद्ध। गायन)

दुसह दोष-दुख दलिन, करु देवि दाया।
छमुख हेरंब अम्बासि जगदंबिके जै-जै भवानी,
चंड भुजदंड खंडिनि मुंड मद भगवानी।
शंभु निशंभु क्रोध वारीधि अरिवृंद वीरे,
देहि माँ देवि विजय जेहि जाया,
दुसह दोष-दुख दलिन, करु देवि दाया॥

(राम द्वारा रावण और लक्ष्मण द्वारा बाणासुर की मृत्यु का अभिनय।)

विश्वामित्र : राम! मृत रावण को उठाओ। लक्ष्मण, बाणासुर को गले से लगाओ। युद्ध, पर घृणा नहीं। विजय, पर अहंकार नहीं।

(राम-रावण, लक्ष्मण-बाणासुर गले मिलते हैं।)

जनक : बेटी, राम के गले में जयमाला डालो।

विश्वामित्र : बेटि, जै हो।

(सीता राम के गले में जयमाला डालती है। लोग गले मिलते हैं।)

पहला परशुराम : अरे, यह धनुष तेरे हाथ में! तेरी यह हिम्मत? मेरे गुरु का अपमान!

दूसरा परशुराम : मूर्ख, पता है, यह शंकर-पिनाक है!

लक्ष्मण : इनमें असली परशुराम कौन है?

तीनों : मैं।

सरजू   क्योंकि सम्पूर्ण धनुष पर नही, सम्पूर्ण तो कभी देखा नहीं, धनुष के एक एक टुकडे पर सबकी नजर है। जो इस समेटकर एक सम्पूर्ण धनुष के रूप म देखेगा, वही इग उठायगा। वही धनुष पर वाण रखकर वेधेगा इस गहर अन्धकार को।

विश्वामित्र   उठहु राम भजउ भव चापा। मटहु तात जनक परितापा ॥

(सगीत बजने लगता है।)

दीनता स बडा और कोई पाप नही। अकर्मता स बडा और कोई अपराध नही। उठो राम, इस धनुष के ऊपर जितना कूडा-कचरा, युगो के मलवे का अम्बार लगा है, इसके भीतर हाथ डालकर उठाओ इस विराट पिनाक को, हम सब इसके सत्य और सौन्दर्य को देख सकें।

(राम बढ़कर धनुष उठाते हैं सगीत और गायन उठता है।)

भर भुवन कठोर रव,
रविवाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि,
श्रहि कौलकुलकलमले ॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे,
सकल विकल विचारही।

(दोनों सखियां गाती हुई जयमाला लिये जानकी को लेकर बढ़ती हैं।)

वडे-वडे नैना रामजी के, कजर भल सोहे हो।
रामा कौन तपस्या तुम कीन्हो
।।जी धना पायो हो ॥
। तो पूजिन महादेव मइया गौरा रानी हो।
रामजी का भाग सीताजी धना पायो हो ॥
।ीता कौन तप कीन्ह रमैइया वर पायो हो।
।म की तपस्या रमैइया वर पायो हो ॥
। जैसे ही राम के गले मे जयमाला डालने लगती
दौडकर जानकी को रोकते हैं।)
हा सकता। मेरे जीते जी यह नहीं हो सकता।
।पार है।
रशुराम तैयार ह।
कहना, असली बात यह है कि रामगुलाम

सरजू बोलने के लिए तुम्हारे पागलखाने काफी हैं। यहाँ रामलीला हो रही है। बार-बार तुम लोग विघ्न डालने की कोशिश करते हो। कभी मौन हो जाया करो, भाई! बच्चे या पौधे का बढ़ना किसने सुना और देखा है? सृजन विकास मौन में है। शोर विनाश का लक्षण है। कुल्हाड़ी मारो, पेट में आवाज होगी, होती है न? पर वृक्ष जब बढ़ता है, फूलता फलता है तो आवाज नहीं करता, चिल्लाता नहीं कि देखो मैं बढ़ रहा हूँ। मौन होकर देखो. .।

नेताई हुआँ। बड़े बने हैं राम-लक्ष्मण! बचपन में मेरे यहाँ भैंस-गोरू चराते थे।

सरजू तुम्हारी आँखें तुम्हारी पीठ पर हैं।

नेताई सब देख रहा हूँ।

सरजू जिस दिन देखोगे, चुप हो जाओगे।

गपोले आप बोल रहे हैं!

सरजू एक धनुष से टूट-टूटकर सबको अलग-अलग आजादी—ऐसी आजादी पशु की आजादी है तभी हम हाँकने वाला एक चरवाहा चाहिए। हर पाँचवें वर्ष हम वही चरवाहा चुनने को मजबूर होते हैं।

गड़बड़सिंह हम भेड़ बकरी किसने बनाया?

सरजू तुम वही हो, चाहे जिसने जैसे बनाया—इसे पहले स्वीकार करो, फिर करो अपनी आजादी नहीं, स्वतन्त्रता की बात। सोचते हो स्वतन्त्रता, स्वराज्य, पर चाहते हो स्वतन्त्रता और स्वराज्य तुम्हें कोई लाकर दे दे। कोई थाली में लाकर परोस दे और तुम मजे से खाओ। समझ लो जनतन्त्र का फल उसी के लिए उतना है जो जितना शक्तिशाली है। देखो, उस फल-लगे वृक्ष को, जो जितना अपने आपसे बढ़कर, ऊँचे उछलकर ऊपर जायेगा, उतना ही फल पायेगा। इसमें उस फल लगे वृक्ष का क्या दोष, इन लोगों के क्या दोष, जिन्हें हम लोग अपना शत्रु समझते हैं? शत्रु है तुम्हारी निर्बलता, कायरता अभाव जिसे हम अपनी आजादी मानते हैं। जीते हो दरिद्रता, करते हो अन्याय, बात करते हो आजादी की! राम और कृष्ण ने युद्ध किये हैं, फिर पायी है स्वतन्त्रता। उठाओ यह धनुष फल प्राप्त करो, राम। नष्ट हो सारी दरिद्रता।

विमला यह धनुष टूटा है। अलग अलग टुकड़ों में बँटा है।

हीरा सब एक दूसरे के शत्रु हैं।

रमई सब दुखी हैं।

सरजू क्योंकि सम्पूर्ण धनुष पर नहीं, सम्पूर्ण तो कभी देखा नहीं, धनुष के एक एक टुकड़े पर सबकी नजर है। जो इसे समेटकर एक सम्पूर्ण धनुष के रूप में देखेगा, वही इसे उठायेगा। वही धनुष पर बाण रखकर बधेगा इस गहरे अन्धकार को।

विश्वामित्र उठहु राम भजहु भव चापा। मेटहु तात जनक परितापा॥

(संगीत बजने लगता है।)

दीनता से बड़ा और कोई पाप नहीं। अकर्मता से बड़ा और कोई अपराध नहीं। उठो राम, इस धनुष के ऊपर जितना कूड़ा-कचरा, युगों के मलबे का अम्बार लगा है, इसके भीतर हाथ डालकर उठाओ इस विराट पिनाक को, हम सब इसके सत्य और सौन्दर्य को देख सकें।

(राम बढ़कर धनुष उठाते हैं संगीत और गायन उठता है।)

भर भुवन कठोर रव,
रविबाजि तजि मारगु चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि,
अहि कोलकुलकलमले॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे,
सकल विकल विचारहीं।

(दोनों सखियाँ गाती हुई जयमाला लिये जानकी को लेकर बढ़ती हैं।)

बड़े-बड़े नैना रामजी के, कजर भल सोहै हो।
रामा कौन तपस्या तुम कीन्हो
सीताजी धना पायो हो॥
बाबा तो पूजिन महादेव मइया गौरा रानी हो।
हमरे रामजी का भाग सीताजी धना पायो हो॥
ए हो सीता कौन तप कीन्ह रमैइया वर पायो हो।
जनम-जनम की तपस्या रमैइया वर पाया हो॥

(जानकी जैसे ही राम के गले में जयमाला डालने लगती हैं, गपोले दौड़कर जानकी को रोकते हैं।)

गपोले नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता। मेरे जीते जी यह नहीं हो सकता। यह अधर्म है। अत्याचार है।

गडबडसिंह हट जाओ, असली परसुराम तैयार है।

गपोले सज्जनो, भाइयो और बहनो, असली बात यह है कि रामगुलाम

और बिमला एक-दूसरे से शादी कर लेना चाहते थे, वैसे तो शादी करने की हिम्मत न थी, इसीलिए धनुपयज्ञ-लीला रची और इस बहाने शादी कर लेना चाहा। यह अधर्म है।

नेताई ऐसा नहीं हो सकता।

शाहजी हाँ।

विश्वामित्र देखते क्या हो, राम? युद्ध करो। लक्ष्मण, चलाओ धनुप। जहाँ ज्ञान-विज्ञान मे, विश्वास-अन्धविश्वास मे, गरीबो-अमीरो मे, नीच-ऊँच मे इतना अन्तर, इतनी दूरी है, वहाँ परिवर्तन युद्ध के बिना असम्भव है। युद्ध करो। शिव-धनुप पर चढाओ बाण। रावण-वध करो, सीतापति राम। चलाओ शकर-पिनाक—जानकी स्वतन्त्र हो! जानकी सीता माँ।

(युद्ध-संगीत। राम-रावण-युद्ध। गायन)

दुसह दोप-दुख दलिन, करु देवि दाया।
छमुख हेरब अ्रयासि जगदबिके जैं-जैं भवानी,
चड भुजदड खडिनि मुंड मद भगवानी।
सभु निसभु क्रोध वारीधि अरिवृद वोरे,
देहि माँ देवि विजय जेहि जाया,
दुसह दोप-दुख दलिन, करु देवि दाया॥

(राम द्वारा रावण और लक्ष्मण द्वारा बाणासुर की मृत्यु का अभिनय।)

विश्वामित्र राम! मृत रावण को उठाओ। लक्ष्मण, बाणासुर को गले से लगाओ। युद्ध, पर घृणा नहीं। विजय, पर अहकार नहीं।

(राम-रावण, लक्ष्मण-बाणासुर गले मिलते हैं।)

जनक बेटी, राम के गले मे जयमाला डालो।

विश्वामित्र देवि, जैं हो।

(सीता राम के गले मे जयमाला डालती है। लोग गले मिलते हैं।)

पहला परसुराम अरे, यह धनुप तेरे हाथ म! तेरी यह हिम्मत? मेरे गुरु का अपमान!

दूसरा परसुराम मूर्ख, पता है, यह शकर-पिनाक है!

लक्ष्मण : इसमे असली परसुराम कौन है?

गपोले मैं।

गडबडसिंह नहीं, मैं हूँ असली परसुराम।

मसखरा कौन है असली परसुराम—युद्ध से इसका अभी फैसला हो जाये। मारो! काटो!

(दोनों युद्ध करते हैं। मसखरा लड़ा रहा है।)

विश्वामित्र टूटो नहीं। जुड़ो, लड़ो नहीं देखो—देखो, तुम्हें कौन लड़ा रहा है?

गपोले ओ, यह बात है।

गडबडसिंह आओ, हाथ मिलायें। देखो भाई, यहाँ से वहाँ तक एक पुल बनाना है। सब लोग अपने अपने कामकाज में लगे हैं तो वह पुल कौन बनवाय? इसके लिए हमें एक जिम्मेदार चरित्रवान आदमी चुनना होगा।

गपोले यह चुन लिया हमने।

(नेताई को बीच में कर लिया है।)

गडबडसिंह चूँकि हम सबने मिलकर इसे चुना, मतलब हम सबने अपनी-अपनी ताकत से थोड़ी-थोड़ी ताकत निकालकर इसे दे दी। फिर तो यह बहुत ताकतवर हो गया। यह पुल तभी बनवायेगा, जब हम इस पर अंकुश रखेंगे। नहीं तो बिना पीलवान के हाथी देखा है?

मसखरा भागो! भागो! ऐसा हाथी सब को रौंद डालेगा।

विश्वामित्र राजनीति पुल बनाती है—जोड़ती है।

नेताई भ्रष्ट राजनीति सिर्फ तोड़ती है।

विश्वामित्र भ्रष्ट व्यक्ति है, समाज है तो राजनीति भ्रष्ट होगी। राजनीति को गाली मत दो, देखो इसे जोड़ो इसे अपने जन से, धरती से। भारतमाता की जै। सियावर रामचन्द्र की जै। मातु जानकी भारतमाता की जै।

(संगीत। यात्रा और गान)

रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर,
गावहिं सकल अवधवासी।
अति उदार अवतार मनुज वपु,
धरे ब्रह्म अज अविनासी॥

नौवाँ दृश्य

मसखरा बस, भाई बस, अब आगे मुझसे नही चला जाता। लो, यह टोपी अपनी सभालो, मैं चला अपने घर।

सरजू अरे, क्या करते हो ? लीला पूरी हो जाने दो।

मसखरा राम ने धनुष उठा लिया। राम-जानकी का ब्याह हो गया। लीला खतम।

सरजू यही से तो शुरू हुई।

मसखरा तो सच-सच बात कह दूँ ? चाहे किसी को बुरा लगे या भला ? राक्षस दैत्य हमारे देवता को पराजित कर चुका है। शकर धनुष उठाने से क्या होगा ? जब तक वह चलाया न जाये।

रामगुलाम जब उठा है तो चलेगा।

मसखरा चलेगा तो मैं चल रहा हूँ।

रामगुलाम अरे-अरे, कहाँ चला ?

मसखरा देखो भाई, जो बात बहुत जरूरी है उसे जरूर कहना होगा, चाहे कितनी कीमत पडे। तो कह दूँ ?

बिमला कह दो।

मसखरा भ्रष्ट, पतित समाज पर, हमारी यह आजादी और प्रजातन्त्र ऐसा है जैसे मेरे सिर पर टोपी। टोपी लगा लो तो जोकर, टोपी उतार लो तो चोकर।

सरजू जो ऐसी प्रजा को जन मे बदल दे, वही है राम।

(गायन)

राम की लडाई आयी
हे भाई, हे भाई।
वोटो से आयी नोटो से आयी।
गाधी से आयी, आंधी से आयी ।।
अफसर से आयी, नेता से आयी।
ऊपर से आयी, नीचे गिरायी ।।

विमला	लोहु से आयी, आसूं से आयी ।।
शिवजी के धनुही से आयी ।।
(सबके हाथ मे वही शकर धनुष)

सब	कैसी मजेदार बात
मिली हमे आजादी आधी रात।
(दूसरी ओर विमला अपनी सखियो के साथ गाती है।)
तो क्या हुआ
बेला फूले आधी रात।
बेला फूले आधी रात
गजरा मैं के-के गले डालूं ?
राम गले डालूं, लखन गले डालूं
बेला फूले आधी रात।

सब	कैसी मजेदार बात
आयी आजादी आधी रात।

सखियां	बेला फूले आधी रात ।।

(परदा)

• •